क्रांति-पुरुष हरि ठाकुर



स्व. श्री हरि ठाकुर को श्रद्धापूर्वक
समर्पित प्रसारिका का विशेषांक

प्रधान संपादक
डॉ. देवीप्रसाद वर्मा बच्चू जांजगीरी

संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा

क्रांति पुरुष : हरि ठाकुर

प्रधान संपादक

डॉ. देवीप्रसाद वर्मा 'बच्चू जांजगिरी'

संकलन और संपादन

डॉ. सुधीर शर्मा

छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन
रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन

की मासिक पत्रिका

प्रसारिका

की प्रस्तुति

मूल्य	:	**70 रु.**
प्रकाशक	:	**छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन** **1, नगरमार्ग, चौबेकॉलोनी, रायपुर**
प्रथम संस्करण	:	**2002**
वितरक एवं मुद्रण-व्यवस्था	:	**वैभव प्रकाशन** 280,उद्भव, सेक्टर-4, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर, डगनिया, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492010 फोन - **262338**

छत्तीसगढ़ के किसान, मजदूर, नागरिक
कवि, साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी और
राजनैतिक चिंतन के प्रखर सिपाहियों के
पथ-प्रदर्शक

क्रांतिपुरुष
श्री हरि ठाकुर

की चिर-स्मृति में
सादर समर्पित

हम आभारी हैं

छत्तीसगढ़ की संस्कृति और
गौरव की रक्षा में सहायक

प्रेरणास्रोत

श्री अजीत जोगी जी

मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ शासन

संरक्षक

पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल

माननीय अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ विधानसभा एवं
प्रांतीय अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

मार्गदर्शक

माननीय श्री सत्यनारायण शर्मा

शिक्षा मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन

सपनों को यथार्थ में बदलने में सहायक, संवेदनशील

श्री रामपुकार सिंह

खनिज एवं जनसम्पर्क मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन
के प्रति.

– डॉ.सुधीर शर्मा
संपादक

एक युग का अंत हो गया

दिनांक 3 दिसंबर 2001 को प्रातः लगभग साढ़े 10 बजे जब कंचन की काया को चंदन की चिता पर लिटाकर अग्नि दी गई तो उस चिता के सामने खड़ा मैं स्वर्गीय श्री हरि ठाकुर को प्रणाम करते हुए यह याद कर रहा था कि उनके रूप में मानो एक युग का अंत हो गया, पटाक्षेप हो गया। एक ऐसे छत्तीसगढ़ के सपूत को हमने खोया, जो एक साथ न जाने क्या-क्या था, कवि था, साहित्यकार था, इतिहासकार थे और छत्तीसगढ़ के संदर्भ में, छत्तीसगढ़ के इतिहास के संदर्भ में, छत्तीसगढ़ के गौरवशाली रत्नों के संदर्भ में एक चलतेत्रफिरते ग्रंथ थे। **लिविंग इन साइक्लोपीडिया** थे यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी।

श्री हरि ठाकुर ने छत्तीसगढ़ की अस्मिता से हम छत्तीसगढ़ियों को अवगत कराया जो हमारे सपूत हुए, जो हमारी बोली, हमारी भाषा के गौरव हैं, जो इस माटी के गौरव हैं तथा इस माटी के इतिहास हैं। जो इस माटी के संघर्ष हैं। उस सब अस्मिता को हम लोगों में अगर जाग्रत करने में किसी एक व्यक्ति का सबसे बड़ा योगदान है, तो वह है श्री हरि ठाकुर का। उन्होंने न केवल न सिर्फ स्वर्गीय प्यारेलाल सिंह की परम्परा को निभाया, उसका निर्वहन किया अपितु उसे बहुत आगे बढ़ाया। यहाँ हम हिन्दी में बोल रहे हैं वे हिन्दी भी उतनी ही अच्छी बोलते थे, जितनी अच्छी छत्तीसगढ़ी बोलते थे और मैं हमेशा उनसे कहता था कि हममें से कोई भी छत्तीसगढ़ी में वास्तव में सही भाषण नहीं दे पाता, चार ही लोग ऐसे हैं - पंडित श्यामलाल चतुर्वेदीबिलासपुर के, श्री हरि ठाकुर रायपुर के, श्री पवन दीवान और केयूर भूषण जितनी स्वाभाविक छत्तीसगढ़ी इनके मुख से निकलती है, उनमें से एक श्री हरि ठाकुर हमारे बीच से आज चले गए हैं। मैं उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

श्री अजीत जोगी
मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़ शासन

(आलेख-आधार : श्री अजीत जोगी, मुख्यमंत्री का विधानसभा में शोक-प्रस्ताव पर दिया गया वक्तव्य)

समर्पित सिपाही और अनमोल शिल्पी - हरि ठाकुर

छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन के समर्पित योद्धा, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, इतिहासविद् गांधीवादी तथा वरिष्ठ साहित्यकार स्व. हरि ठाकुर को देशभक्ति और सेवा का गुण विरासत में मिला था। वे त्यागमूर्ति ठा. प्यारेलाल सिंह के तृतीय पुत्र थे। अपने स्कूल में तिरंगा झंडा फहराने के कारण वे दंडित भी किए गए थे। सन् 1942 के अगस्त क्रांति के समय भूमिगत रहकर उन्होंने आंदोलन का नेतृत्व किया। 1955 में गोवा मुक्ति आंदोलन में बंदी रहे।

छत्तीसगढ़ के हिन्दी साहित्य के अनमोल शिल्पी स्व. श्री हरि ठाकुर की अनेक साहित्यिक कृतियां प्रकाशित हुई। जिसमें छत्तीसगढ़ी साहित्य के साथ छत्तीसगढ़ के इतिहास पर भी महत्वपूर्ण लेखन किया। उन्हें अनेक संस्थाओं ने सम्मानित कर अपने आप को गौरवान्वित महसूस किया। छत्तीसगढ़ी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में स्व. हरि ठाकुर ने छत्तीसगढ़ की अस्मिता, इतिहास, कला, दर्शन, साहित्य तथा छत्तीसगढ़ी भाषा को परिमार्जित तथा प्रसारित किया।

बौद्धिकता और संवेदनशीलता का स्व. हरि ठाकुर में अपूर्व समन्वय था। उनकी कविताओं में अनेक उपादान, प्रेम, ऋतु, प्रबल आक्रोश के साथ नव-निर्माण का संदेश है। गद्यकार और पद्यकार, इतिहासकार और साहित्यकार, पत्रकार और संपादक, लेखक और समीक्षक आदि विविध जीवन-शैली धनी सरस्वती के वरद् पुत्र हरि ठाकुर की सहजता में भी भव्यता, मृदुता में ओज और कबीराना अंदाज में भी मांसल प्रेम के साथ धरती का वंदन था। 'स्वर्णिम संकल नहीं बनूगाँ' कहकर वे स्वाभिमानी जीवन के स्वर मुखरित करते रहे। उन्होंने लिखा भी है -

जिन नयनों में कभी नेह की नदी नहीं लहरायी,
उन नयनों के लिए कभी मैं काजल नहीं बनूंगा।
दल-दल में फंस जाय भले रथ, कांटों से घिर जाय हर पथ,
किंतु महल के दरवाजे का स्वर्णिम संकल नहीं बनूंगा।

छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति की अभिवृद्धि के लिए समर्पित हरि ठाकुर के अभिनंदनीय और अनुकरणीय व्यक्तित्व और कृतित्व की जितनी भी सराहना की जाए, वह कम है। उन्होंने छत्तीसगढ़ की माटी की सुगंध को अभिव्यक्ति देने का वंदनीय प्रयास किया। उन्होंने पूरे आवेग के साथ छत्तीसगढ़ी में लिखकर इस भाषा का गरिमा गान ही नहीं किया बल्कि उसे लोकोक्ति और मुहावरे से स्तुत्य परिशोधन किया है। प्राकृतिक उपादानों में असामयिक परिवर्तन और मानवीय भावनाओं के विपरीत स्वभावजन्य

विद्रुपताओं से व्यथित संवेदनशील कवि हरि ठाकुर ने अपने उत्कृष्ट भावों को जिस सरलता से व्यक्त किया उसमें गंभीरता के साथ सहजता, सादगी के साथ गीतों की एकात्मक, भावात्मक और लयात्मक पच्चीकारी भी है। जैसे -

जब से ऋतुओं ने तोड़ी है अपनी ही निर्मित परंपरा
तब से यह धरती मुझको बंजर-सी लगती है।
कोयल की बोली, छाती में मुझको खंजर-सी लगती है।

हरि ठाकुर की छत्तीसगढ़ी कविताओं में नवनिर्माण और आशावाद का स्वर मुखरित है। 'बानी हे अनमोल' काव्य संग्रह में देवी देवताओं का अर्चन वंदन तो है ही छत्तीसगढ़ के तीज त्यौहार, आचार विचार और प्रकृति का भी प्रभावी चित्रण है। प्रकृति के चतुर चितेरे हरि ठाकुर ने विविध प्रतीकों, उपमानों और बिम्बों के द्वारा यहाँ परिवेश का जीवंत चित्र उकेरा है जैसे -

पानी बरसै झोर-झोर के, नदिया नरवा रौंदत दउड़े
मेढ़ पार ला टोर-फोर के, पानी बरसै झोर-झोर के
बिजली कोर्रा अस चमकत हे, बादर बघवा अस गरजत हे
हवा बोहावत सीटी पारत चक्कर काटत गली खोर के।

बहुआयामी के व्यक्तित्व के धनी हरि ठाकुर में छत्तीसगढ़ रचा बसा था। उनकी लेखनी ने जहां एक ओर स्वतंत्रता आंदोलन और राज्य निर्माण के लिए क्रांति का कार्य किया वहीं शांति के समय वंशी का कार्य किया।

कवि के जीभ खरग उर बानी
एक ओर आग दूसर ओर पानी

इस पंक्ति को अपने व्यक्तित्व और कृतित्व में चरितार्थ करने वाले श्री ठाकुर ने जहां कही भी और जिन प्रसंगों पर जरूरत महसूस की, अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज कराने में कभी भी कृपणता नहीं दिखाई।

राजेन्द्र शुक्ल

(राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल)
अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ विधानसभा
एवं प्रांतीय अध्यक्ष,
छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

हरि ठाकुर : आने वाली पीढ़ियों के प्रेरणास्रोत

श्री हरि ठाकुर को मैं अनेक वर्षों से जानता रहा और मेरा सौभाग्य रहा कि न केवल मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त होता रहा, अपितु अनेक अवसरों पर मैंने उनसे बहुमूल्य सुझाव भी लिए हैं। आज उनका अचानक चला जाना मेरे लिए अत्यंत असहनीय है।

श्री हरि ठाकुर अनेक पीढ़ियों के साथ संघर्ष करते हुए अपना रास्ता खुद बनाते चलते रहे। सचमुच न थकने वाले यात्री की तरह वे विषम परिस्थितियों में भी उत्साह के साथ कार्य करते थे। छत्तीसगढ़ की अस्मिता, संस्कृति, साहित्य, किसान-मजदूर आदि के लिए उनकी मन में अजीब-सी छटपटाहट रहती थी। श्री हरि ठाकुर मूलत: कवि थे। इसलिए उनका कवि हृदय उनके सभी कार्य-क्षेत्रों में विद्यमान था। शोषण, उपेक्षा और संघर्ष के साथ-साथ छत्तीसगढ़ का गौरव उनकी कविताओं का मूल स्वर है। लोहे का नगर, बादर-गीत, धान का कटोरा और शहीद वीरनारायण सिंह के खंड-काव्य में श्री हरि ठाकुर के अनेक रूप दिखाई देते हैं। इसी प्रकार श्री हरि ठाकुर गद्य-साहित्य भी अत्यंत समृद्ध है, विशेषकर चिंतनों और निबंधों तथा महापुरुषों की जीवनी संबंधी तथा पुरातत्व और इतिहास संबंधी पुस्तकों में श्री हरि ठाकुर के पारदर्शी विचार और ऐतिहासिक तथ्य छत्तीसगढ़ कर मान-सम्मान बढ़ाने में प्रतिनिधि रहे हैं।

साहित्य से इतर समाजसेवा, सहकारिता, राजनीति और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी वे अग्रणी रहे और उन्होंने हमारा नेतृत्व किया। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और उसके गौरवपूर्ण स्वरूप के संबंध में भी उनके योगदान को नहीं भुलाया जा सकता।

आज श्री हरि ठाकुर हमारे बीच नहीं है लेकिन अपने विशाल साहित्य के माध्यम से वे अनेक पीढ़ियों तक हमारे बीच सक्रिय रूप से उपस्थित रहेंगे। न केवल उपस्थित रहेंगे बल्कि आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देते रहेंगे। श्री हरि ठाकुर ने छत्तीसगढ़ को जीवन-भर दिया है आज उन्हें देने के लिए हमारे पास श्रद्धा के फूल ही हैं। प्रस्तुत पुस्तक श्री हरि ठाकुर को सदियों तक हमारे बीच अमर रखने के लिए सहायक सावित होगा।

श्री हरि ठाकुर ने मुझे दो बातों पर ही ध्यान रखने का आशीर्वाद दिया था। पहला - प्रमाण, दूसरा - परिणाम। मैं ने हमेशा उनके इस समझाइश का ध्यान रखा है।

श्री हरि ठाकुर जी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

(सत्यनारायण शर्मा)

उच्च-शिक्षा, शालेय शिक्षा, तकनीकी शिक्षा,
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा
जनशक्ति नियोजन मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन

कर्मवीर सदैव विद्यमान रहेंगे

छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के द्वारा छत्तीसगढ़ के क्रांति पुरुष, किसानों-मजदूरों के पथ प्रदर्शक, प्रसिद्ध कवि, साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी, राजनैतिक चिंतक तथा छत्तीसगढ़ महतारी के सच्चे सपूत स्व. हरि ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर क्रांतिपुरुष : हरि ठाकुर का प्रकाशन किया जाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजति है।

इस संग्रह के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को स्व. हरि ठाकुर के छत्तीसगढ़ के गौरव के प्रति किए गए अविस्मरणीय कार्यों की जानकारी प्राप्त होगी और साहित्य से उन्हें प्रेरणा मिलेगी। स्व. हरि ठाकुर का साहित्य, उनका चिंतन और उनकी जीवन-शैली सभी को प्रभावित करती है। अपने साहित्य के माध्यम से स्व. ठाकुर सदैव हमारे बीच विद्यमान रहेंगे। साथ ही यह पुस्तक आनेवाली पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक तथा शोधार्थियों के लिए संदर्भ-पुस्तक का काम करेगी।

स्व. हरि ठाकुर अपने पिता स्व. ठाकुर प्यारेलाल सिंह की तरह त्याग की प्रतिमूर्ति थे। समाज को देने की परंपरा उन्हें विरासत में मिली थी। प्रस्तुत पुस्तक के संग्रह-संपादन में डॉ. सुधीर शर्मा ने जो मेहनत की है, वह भी प्रशंसनीय है। छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन और प्रसारिका को अन्य मनीषियों के कृतित्व को भी रेखांकित करते हुए प्रकाशन करना चाहिए।

छत्तीसगढ़ के ऐसे महान कर्मवीर को मैं शत्-शत् प्रणाम करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। इस पुस्तक के व्यापक प्रसार और इसके उद्धेश्यों की पूर्ति की कामना करता हूँ।

रामपुकार सिंह
खनिज एवं जनसंपर्क मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन

सम्पादकीय

हरि बाबू और मेरा साथ 1943-1944 से रहा था। मुझे अच्छे से याद है कि जब बापू की हत्या हुई, उस समय डॉक्टर पांडे के घर पर सारी साहित्यिक मंडली बैठी थी- और हरि फूट-फूट कर रो रहा था।

इसके बाद यदि मैं यह कहूं कि मेरा फ्रेन्ड-फिलासफ़र गाइड वह था, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। नागपुर रेडियो स्टेशन के कवि सम्मेलन में हम दोनों साथ गए थे। कवि सम्मेलन के दर्शक के रूप में प्रभाकर माचवे, विनय मोहन शर्मा और यशपाल जी जो "कुत्ता और कुत्ता" पर वार्ता प्रसारित करके आये थे। हमारे श्रोता थे। मेरी और हरि की जोड़ी नागपुर जाने के बाद बढ़ जाती, उसमें रामकृष्ण श्रीवास्तव और मुक्तिबोध भी सम्मलित हो जाते थे। उसमें भवानी तिवारी और प्रभुदत्त अग्निहोत्री भी थे। इसके बाद हम लोगों का लिखने का क्रम चलता रहा। आगे हरि 'साम्ययोग' में कार्य करने नागपुर गया - मैं 'महाकौशल' के कार्य से माह में एक-दो बार जाता। ठरहता मुख्यमंत्री निवास में, पर काम निपटाकर हरि के पास आ जाता - हम दोनो मुक्तिबोध जी के तरफ जाते, वे नयाखून के सम्पादकीय विभाग में थे - रामकृष्ण श्रीवास्तव, शैलेन्द्र सभी से भेंट होती। शाम को अक्सर हम सब मुक्तिबोध जी के घर पर होते। कभी आलू-पोहा-तो, कभी गरम भजीये के साथ चाय मिलती। वे अक्सर मुझसे कहते रेडियो स्टेशन रायपुर में खुले न खुले आप इस समय अपना समय बर्बाद न करें। आप लिखने पर ध्यान दें।

सहर गया, आज हरि बाबू की आज तेरही है - मैं जब गोयल के अस्पताल से निकला था, तब उनका पूरा परिवार बहुत आशावान था, पर मेरी आँखों से निरंतर आँसू बह रहे थे। मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी की भी वही दशा थी। हम उस रात कुछ खा पी न सके। हरि बाबू से मेरी वह आखरी भेंट थी। वह जब कुछ लिखता तो पहिले मुझे सुनाता फिर समाज के सामने रखता। जब **संज्ञा** की योजना बनी, तब मैं प्रकाशक बना। जब **नये स्वर** निकाला गया तब मैं ने अपने को सबसे पीछे रखा, क्योंकि इसके लिए कोई तैयार नहीं था। उसमें हरि ठाकुर ने पहली कविता में लिखा था -

ओ खेत खार खलिहान
नदी सागर पर्वत घाटी,
मैं सूर्य किरण के साथ
तुम्हें आवाज लगाता हूँ ।

वह विद्रोही कवि था - वीर रस उसके शब्द-शब्द में कूट-कूट कर भरा था। ब रियासतों की जंग चली, पाकिस्तान की बात उठी तब उसने कहा -

कासिम रिजवी क्या जिन्ना को हम आज चुनौती देते हैं।
यहाँ के पर्वतों की पसलियों की पाँख होती है।
यहाँ के सागरों के हर लहर की आँख होती है
यहाँ के टहनियों में फुल रहे अंगार के शोले,
यहाँ हर खेत का ढेला मुकाबिल तोपों के गोले।

पर वह मात्र वीर रस का कवि नहीं था उसमें असाधारण करूणा थी -

मेरा मन पोनी-सा धुन-धुन कर रोता है
या
जा रही चली अर्थी आशा की
नश्वर जग को कर राम राम
या
तुम करो श्रृंगार मैं देखूं
तुम बहावो नीर मैं देखूं

मुझे मेरे जन्म ग्राम जाँजगीर में उसका कार्ड मिला जल्दी आओ मैं ने खंड काव्य लिखा है। हम दोनों भोजन करके बैठे- उसने सुनाना शुरू किया मैं ने कुछ आपतियाँ रखी - ऐतिहासिक तथ्य और कुछ करीब 12 बजे रात को हम दोनों सोने गए । सुबह दिनचर्या से निवृत होकर मैं ने कहा- ला न भाई कैसा सुधारा है देखें। उसका सहज उत्तर था मैं ने उसे फाड़ दिया। उसके लिखने का समय भी उटपटांग था। वह ब्रह्म मुहूर्त बेला में ही कविता लिखता, दिन में वह पुराणों को पढ़ना और

अपने इतिहास पुरुषों को ढूँढता। मुझे इसका इतिहास की ओर जाना अच्छा नहीं लगता था, पर मेरे बार-बार कहने पर भी वह लिखता रहा और मैं ने छत्तीसगढ़ साहित्य सम्मेलन से उसे प्रकाशित करवाया और भूमिका भी मैं ने लिखी।

हरि ने बख्शी जी पर बहुत अच्छी कविता लिखी -

साहित्य देवता तेरी जय हो,
यश जिसके द्वारे पर बैठा
बनकर आज भिखारी आदि।

उसके विषय में क्या कहूँ - कितना कहूँ - लगता है सब छूट गया अब तेरा साथ ही छूट गया मुझे कौन डांटेगा - कौन पूछा करेगा - कौन छत्तीसगढ़ का सैंतीसवांगढ़ कहकर पुकारेगा। तेरी कमी जीवन भर खलेगी। मैं अपनी श्रद्धांजलि इन्हीं शब्दों के साथ प्रस्तुत करता हूँ।

तेरा अपना ही

बच्चू जाँजगीरी

अनुक्रम

हरि ठाकुर : संघर्षों से न थकने वाला यात्री

नाम	-	हरि ठाकुर
पूरा नाम	-	ठा0 हरिनारायण सिंह
जन्म तिथि	-	16 अगस्त 1927
जन्म स्थान	-	रायपुर
पिता	-	त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह
माता	-	श्रीमती गोमती देवी
शिक्षा	-	बी. ए. एल. एल. बी.
महाप्रयाण	-	3 दिसंबर 2001

उल्लेखनीय कार्य-

1942 के आंदोलन से लेकर 1955 के गोआ मुक्ति तक स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय ,1954 साम्य योग नागपुर भूदान की पत्रिका का संपादन, भूदान आंदोलन में सक्रिय ,1955-66 रायपुर में वकालत,1956- डॉ. खूबचंद बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ी महासभा के निर्माण व संचालन में सहयोगी, 1960 - छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित, 1965-66 संज्ञा (मासिक) का संपादन, 1966-78 साप्ताहिक राष्ट्रबंधु का संपादन, 1967- डॉ0 खूबचंद बघेल के नेतृत्व में गठित छत्तीसगढ़ी महासभा के महासचिव, 1977- छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन का पुनर्गठन और संयोजन, 1979 - समता गृह निर्माण सहकारी समिति के अध्यक्ष, संस्थापक अध्यक्ष - छत्तीसगढ़ लोक कला समिति,1992- छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण सर्वदलीय मंच के गठन के लिए संयोजक तथा अध्यक्षीय मंडल के सदस्य अध्यक्ष - सृजन सम्मान सहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था,अध्यक्ष छत्तीसगढ़ साहित्य परिषद, पूर्व सदस्य जिला साक्षरता समिति,जिला सतर्कता समिति,दैनिक भास्कर सलाहकार मंडल,जिला पुरातत्व संघ,सदस्य परामर्शदात्री समिति मेकाहारा,सदस्य शहीद स्मारक ट्रस्ट कमेटी,स्वतत्रता संग्राम सेनानी संगठन , संयोजक छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण

संयोजन समिति.

श्री हरि ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर हुए कार्य एवं उनके प्रकाशन

प्रो0 जगदीश तिवारी द्वारा श्री हरि ठाकुर के सहित्य पर पी-एच. डी तथा गीता गुप्ता, मजहर अली खान एवं प्रहलाद दमोहे द्वारा हरि ठाकुर की कृतियों पर लघु शोध-प्रबंध, दैनिक नवभारत भास्कर, अमृत संदेश सहित अंचल के अनेक पत्र- पत्रिकाओं स्मारिकाओं विशेषांकों में छत्तीसगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम, साहित्य, इतिहास, पर्यावरण, छत्तीसगढ़ आंदोलन विषयक लेख और शोध प्रबंधों का लेखन, महाराष्ट्र की पाठ्य पुस्तकों मे कविताओं का प्रकाशन

प्रकाशित कृतियाँ :

त्यागमूर्ति ठा. प्यारेलाल सिंह (जीवनी), लोहे का नगर (काव्य-संकलन), छत्तीसगढ़ के रत्न (जीवनियाँ), छत्तीसगढ़ी गीत अऊ कविता, गीतों के शिलालेख (गीत-संकलन), नये विश्वास के बादल (काव्य-संकलन), जय छत्तीसगढ़ (काव्य-संकलन), सुरता के चन्दन, पीरूष: नये संदर्भ (काव्य-संकलन), शहीद वीरनारायण सिंह (काव्य-संकलन), उत्तर कोसल बनाम दक्षिण कोसल(शोध-निबंध), मुक्ति गीत (काव्य-संकलन), अंधेरे के खिलाफ (काव्य-संकलन),छत्तीसगढ़ी के इतिहास पुरुष (जीवन-परिचय), शहीद वीरनारायण सिंह (छत्तीसगढ़ राज्य का आरंभिक इतिहास), छत्तीसगढ़ गाथा (प्रकाशक-रूपान्तर रायपुर) (ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक निबंधों का संकलन), जल, जंगल और जमीन का संघर्ष की शुरूआत, (प्रकाशक-रूपांतर, रायपुर), धान के कटोरा (काव्यद्धसंकलन), कोसल की भाषा कोसली- सम्बलपुर विश्वविद्यालय में पठित निबंध, बानी हे अनमोल (काव्य-संकलन), छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक विकास (शोध-निबंध), हंसी एक नाव-सी (काव्य-संकलन).

सम्पादन -

नवज्योति (मासिक) स्व श्यामबाबू के सहयोगी, छत्तीसगढ़ केसरी (साप्ता.) स्व क्रांतिकुमार भारती के सहयोगी, साम्ययोग (साप्ताहिक) नागपुर, नये स्वर भाग 1 और 2, संज्ञा (मासिक), कुंजबिहारी चौबे की छत्तीसगढ़ी कविताएँ,

राष्ट्रबंधु (साप्ताहिक), समवाय (काव्यखण्ड), पं0 विष्णुकृष्ण जोशी अभिनंदन ग्रंथ- सहयोगी सम्पादक, रायपुर लघु समाचार पत्र सम्पादक संघ की स्मारिकाएँ, डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा स्मृति ग्रंथ - सहयोगी सम्पादक, मोतीलाल वोरा अभिनंदन स्मारिका - सहयोग सम्पादक, कोसल कौमुदी (रविशंकर विश्वविद्यालय) सहयोगी सम्पादक , पं. रामानंद दुबे अभिनंदन ग्रंथ - सहयोगी सम्पादक, धनी धरमदास के छत्तीसगढ़ पद , डॉ. खूबचंद बघेल स्मृति ग्रंथ , त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह स्मृति ग्रंथ (प्रकाशनार्थ लंबित), पं. सुंदरलाल शर्मा कृत छत्तीसगढ़ी दानलीला (पं. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर).

हरि ठाकुर पर केंद्रित प्रकाशन -

1	हरि ठाकुर : व्यक्तित्व और कृतित्व	सम्पादक :	नन्दकिशोर तिवारी
2	हरि ठाकुर का काव्य व्यक्तित्व	सम्पादक :	विश्वेन्द्र ठाकुर
3	अभिनन्दन : हरि ठाकुर	अभिनंदन ग्रंथ :	सम्पादक- प्रफुल्ल झा एवं चेतन भारती
4	छत्तीसगढ़ राज्य आन्दोलन और हरि ठाकुर	सम्पादक:	चेतन भारती

सम्मान -

छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन धमतरी, श्री चक्रधर ललित कला केन्द्र रायगढ़, हिन्दी साहित्य समिति थान खम्हरिया, सृजन छत्तीसगढ़ साहित्य सम्मेलन, छत्तीसगढ़ लोककला उन्नयन मंच भाटापारा, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल, ऋतंभरा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंच कुम्हारी, छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण सर्वदलीय मंच पाटन, महात्मा गांधी 125 वां जन्मवर्ष समारोह भोपाल, शास0 दू0 श्री वै0 कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़ राजपूत कल्याण परिषद् रायपुर, हिन्द स्पोर्टिंग एसोसिएशन (हीरक जयंती) रायपुर,नवसाक्षर लेखन कार्यशाला बलौदाबाजार , भारतीय स्टेट बैंक छुरा, छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति रायपुर, युवा क्रांति मंच रायपुर, जनरल सिंधी पंचायत रायपुर, स्वतंत्रता स्वर्ण जंयती समारोह पं0 रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर, शहीद भगतसिंह वार्ड वेलफेयर एसो0 टाटीबंध रायपुर, महावीर शिक्षा प्रचार समिति रायपुर, शासकीय नवीन कन्या

महाविद्यालय रायपुर, हिन्दी विभाग दुर्गा महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़ चैम्बर ऑफ कामर्स रायपुर, महात्मा गॉधी 125 वां जन्म समारोह समिति हिन्दी दिवस दुर्ग, इतिहास परिषद् दुर्गा महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़ी साहित्य सम्मेलन रायपुर, राजकुमार कॉलेज रायपुर, रायपुर विकास प्राधिकरण रायपुर, स्वर्ण जंयती वर्ष (1997-98), महाकोशल कला परिषद् रायपुर, अखिल विश्व श्री वल्लभ सेवा समाज, रामचन्द्र देशमुख बहुजन सम्मान भिलाई , ठा0 प्यारेलाल सिंह स्मृति सम्मान भिलाई, म0प्र0 स्टेट आई0 टी0 आई0 एसो0 भिलाई, स्व0 लखनलाल मिश्र शिलालेख आवरण समारोह ग्राम- मूरा जिला रायपुर, स्वतंत्रता स्वर्ण जंयती साईंस कालेज रायपुर, महंत नरेन्द्रदास स्मृति सम्मान भोपाल, पत्रकारिता सम्मान छत्तीसगढ़ महाविद्यालय रायपुर, सरस्वती क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक समिति रायपुर, जनजागरण मंच कंडेल, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मान नगर पालिका निगम रायपुर, छत्तीसढ़ बुनकर सहकारी संघ रायपुर, निराला साहित्य समिति थान खम्हरिया, छत्तीसगढ़ी साहित्य सम्मेलन द्वारा नागरिक अभिनंदन , युवा स्वर्णकार समाज द्वारा नागरिक अभिनंदन, नगर पालिका निगम रायपुर द्वारा साहित्यकार सम्मान समारोह, महाकोशल कला परिषद् द्वारा महाकोशल अलंकरण और अनेक सम्मान.

●

हरि ठाकुर : जिन्होंने कभी विराम नहीं लिया

■ परदेशीराम वर्मा

छत्तीसगढ़ राज्य अब साल भर का हो गया है। इस बीच इस राज्य के जन्मोत्सव से जुड़े समारोहों की ऐसी श्रृंखला बनी, कि पता ही नहीं चला कि साल कैसे बीत गया। हमारा धान का कटोरा एक बरस का हो गया।

शब्द शिल्पी **माननीय विधानसभा अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल** तथा कबीर को मानने और **हरि ठाकुर** को जानने वाले **सहृदय मुख्यमंत्री श्री अजीत जोगी** ने उनके दर पर हाजिरी देकर अपना और अंचल के भावनाप्रधान लोगों का मान बढ़ाया।

छत्तीसगढ़ियों के सुपरिचित रचनाकारों में तपस्वी श्री हरि ठाकुर अपने कृतित्व और व्यक्तित्व की संजीदगी के कारण विशेष सम्मान के सर्वथा योग्य हैं। इन्होंने न केवल शब्द रचे, बल्कि मैदान में उतरने का साहस भी दिखाया। सुबह होने तक सतत संघर्ष किया। इसलिए जनता में हरि ठाकुर अपनी तेजस्विता और सामर्थ्य के कारण ऋषितुल्य महत्व पाते हैं। जन-जन में जिन्हें जीवनकाल में ही मान मिलता है, उनमें हरि ठाकुर एक उल्लेखनीय रचनाकार हैं।

हरि ठाकुर इतिहास निर्माता साहित्यकार हैं। त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह एवं माता गोमती देवी के सपूत हरिनारायण सिंह 16 अगस्त 1927 को जन्मे। छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन में सबको जोड़ने वाले सबके प्रिय हरि ठाकुर छत्तीसगढ़ पर्याय बन गए। पत्रकारिता और साहित्य क्षेत्र की अपनी सिद्धि को भी उन्होंने माटी महतारी की सेवा का एक माध्यम ही माना।

''संज्ञा'' पत्रिका के यशस्वी संपादक श्री हरि ठाकुर को उनके समकालीन कुछ कलमकारों ने समय-कुसमय आहत भी किया। छत्तीसगढ़ी आंदोलन के संदर्भ

में क्रेडिट हथियाने के लिए आतुर शब्द कुमारों के व्यंग्य बाण से वे चकित रह जाते हैं। केवल इतना ही पूछते हैं कि मैं तो कभी इन्हें आहत नहीं करता, ये क्यों कुपित होते हैं भाई ?

छत्तीसगढ़ महतारी के प्रति उनकी छत्तीसगढ़ी और हिन्दी की दो-दो पंक्तियां यहाँ प्रस्तुत हैं ....

"ओखर अंचरा के छइंया हे, शीतल मंगलकारी."

"ऐसी मां पाकर यह जीवन कल्पवृक्ष का सुमन हो गया,
जो भी गीत लिखा माता पर, वह गाते ही भजन हो गया।"

छत्तीसगढ़ राज्य अभी नहीं बनेगा यह मानकर अपनी ढपली पर अपना राग अलापने वाले कुछ उपनिवेशवादी सामंती प्रवृत्ति के गिरोहबंद लोगों ने भरपूर विरोध किया। अचानक जब यह राज्य अस्तित्व में आ गया, तो वही गिरोह इसे संस्कार देने की चिन्ता जताते हुए अग्रिम पंक्ति में खड़ा भी हो गया। हरि ठाकुर इनकी उस्तादी से जीवन भर परिचित होते रहे। उन्होंने 1977 में ही कह दिया था....

"पृथक छत्तीसगढ़ ईश्वर की इच्छा है, और ईश्वर की इच्छा को कौन टाल सकता है।" "आज जो पृथक छत्तीसगढ़ का विरोध कर रहे हैं, कल उन्हें अवश्य अपने पाप का बोध होगा। किन्तु तब प्रायश्चित का समय नहीं रहेगा।"

निराला जी से जुड़ा एक बेहद प्रेरक प्रसंग हिन्दी साहित्य का प्रायः हर विद्यार्थी और रसिक जानता है। यह प्रसंग उनके साहस और स्वाभिमान को स्पष्ट करता है। साहित्य सम्मेलन के मंच पर अतिथि के रूप में तत्कालीन सर्वाधिक तेजस्वी नेतागणों को आसीन देखकर और प्रेमचंद को नीचे की पंक्ति में बैठे देखकर निराला जी ने विरोध व्यक्त किया था कि यह शोभनीय नहीं है।

इधर अपने छत्तीसगढ़ में जब मैं देखता हूँ कि कमोबेश साहित्यकारों के प्रति हिकारत की तो नहीं लेकिन सम्मान देने के दुहरे मानदण्डों के संदर्भ में हाल लगभग वैसा ही है। उसके लिए हम लोग भी दोषी हैं। एक तो हम लोग निराला,

प्रेमचंद के पाँव के धोवन भी नहीं हैं, उधर से आज के नेता जवाहरलाल और राजेन्द्र प्रसाद की तरह न विद्वान हैं, न विद्वता के कायल ही। इसलिए आसन मारि डिम्बधारी बैठे नेतागणों को लेकर हम लोग विरोध में गरज भी नहीं सकते। मगर एक दृश्य मैं बार-बार देखता हूँ तो मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है।

छत्तीसगढ़ का बड़े से बड़ा नेता किसी समारोह में श्री हरि ठाकुर को देख भर ले, उन्हें परघाते हुए मंच तक ले जाकर ही साँस लेता है। श्री हरि ठाकुर की यह एक अतुलनीय कमाई है। उन्होंने शब्द की ताकत से यह गौरवपूर्ण स्थिति को प्राप्त किया है। अल्पभाषी, फकीरी में मगन रहने वाले हरि ठाकुर के सामने सत्ता का श्रीहत् हो जाना सिद्ध करता है, तपस्या कभी निष्फल नहीं होती।

'छत्तीसगढ़ के इतिहास पुरुष' उनका शोधपरक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त 15 प्रकाशित ग्रंथ और हैं, जिनमें अवगाहन कर हम छत्तीसगढ़ को समझ सकते हैं। 7 संपादित ग्रंथ हैं, जिनमें **धनी धरमदास के छत्तीसगढ़ी-पद** भी शामिल है। छः सौ वर्ष पूर्व बांधवगढ़ से कबीर का संदेश लेकर छत्तीसगढ़ आए धनी धरमदास के पदों का चयन एवं प्रकाशन अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। छत्तीसगढ़ी के इस कवि के पदों के कारण 6 सौ वर्ष से सतत चिंतन और लेखन का इतिहास और उसकी टूटी कड़ियाँ हमारे हाथ लगती हैं। यही दुर्लभ दृष्टि हरि ठाकुर की ऐसी विशेषता है जिसके कारण साहित्य, संस्कृति, राजनीति और समाजसेवा, आदि क्षेत्रों से जुड़े लोग ब्राम्हण पारा स्थित उनकी कुटी में जाकर सिर नवाते हैं।

हरि ठाकुर जी छत्तीसगढ़ की महिमा के जानकार हैं। महिमा के गायक तो बहुतेरे हैं लेकिन जानकार मानना और मान कर जानने में जो फर्क है, वह लेखन से स्पष्ट झलक जाता है। श्रृंगार की पंक्तियाँ भी उनके साहित्य में है लेकिन बहुत शालीन :

"सुन सुन रसिया,
तोर आंखी के काजर लागय हंसिया"

जैसी साफ सुथरी पक्तियाँ वे ही लिख सके।

छत्तीसगढ़ के लिए जो आंदोलन हुए, उसमें सर्वाधिक सार्थक और निर्णायक आंदोलन डॉ. खूबचंद बघेल के नेतृत्व में हुआ। श्री हरि ठाकुर उस आंदोलन के सेनापतियों में से एक ऐसे तपवस्वी हैं, जिन्होंने कभी विराम नहीं लिया। लोग चुप हो गए, तब भी वे भीतर ही भीतर चिल्लाते रहे।

''हमर झोपड़ी वाला मन के,
मरन हवे जी बिना मरन के।
भीतरे-भीतर चुरत हवन जी,
हम चाऊर जइसे अंधन के।''

छत्तीसगढ़ के लिए व्यथित तो बहुतेरे रचनाकार हैं लेकिन जिस साहस के साथ हरि ठाकुर अपनी बात कहते हैं, वैसा साहस कलमकारों ने कम दिखाया है।

वे शोषण के कारणों की बड़ी बेबाकी से पड़ताल करते हैं। और रट-पिट कहते चलते हैं। उन्हें न किसी विश्वविद्यालय का कुलपति पद रिझाता है, न वे किसी पीठ पर फसकरा कर बैठने की जुगत भिड़ाते हैं, हाँ, छत्तीसगढ़ियों के पेट पर जो लात लगाते हुए ऐंठते फिर रहे हैं, उन पर चाबुक चलाने में वे सबसे आगे हैं।

●

आस्थावादी कवि : हरि ठाकुर

■ नंद किशोर तिवारी

छत्तीसग , के किसी भी कवि पर बेबाक अपनी राय जाहिर करने में उतनी तकलीफ नहीं होती ।जितनी कि हरि ठाकुर पर। उसका कारण महज इतना ही है, इस कवि की कविता-यात्रा अत्यन्त टेढ़ी-मेढ़ी है। मूलत: गीतकार के रूप में अपनी यात्रा प्रारंभ करने वाला यह कवि कब गीतों की पगडंडी छोड़कर नई-कविता और युवा-कविता के कंटकाकीर्ण रास्ते को अख्तियार कर लेगा और कब फिर गीतों के रास्ते पर आ लगेगा, यह कहना अत्यन्त कठिन है।

कहना यह और भी कठिन है कि अपने चुने गए रास्ते में किस स्थान पर यह असफल है। लगता है, असफलता नाम की किसी भी चीज से उसका कही कोई संबंध नहीं है। हाँ, यह जरूर है कि किसी कालखण्ड में कुछ एक कवियों को चर्चित करने वाले समीक्षकों, उखाड़-पछाड़ करने वाले तथाकथित आलोचकों को पटाने अथवा उनके खेमों में समा सकने में हरि ठाकुर नितान्त असफल रहे हैं।

श्रीराम वर्मा ठीक ही कहते हैं कि - इन तथाकथित आलोचकों तथाकथित कविता आंदोलनों का यही हाल रहा तो यह काम - महिमा क्षण-क्षण बनती मिटती रहेगी। ऐसा होते रहने में आंदोलन और आलोचक से तटस्थ रहने वाले रचनाकार अचर्चित रह जाते हैं। हरि ठाकुर ऐसे ही प्राय: अचर्चित कवि हैं। यह एक अलग बात है कि यशोगान करने वाले चंद चर्चित मंडलियों से अलग - हरि ठाकुर की कविताओं की चर्चा भी बड़े-पैमाने पर होती रही है।

जब हरि ठाकुर ने गीतों की दुनिया में कदम रखा तब छायावादी कवियों ने अपने आँसुओं से अन्त:कलुष को इतना धो डाला था कि देह पारदर्शी हो गई थी। शब्द एक निश्चित अर्थ और आकार में में ढलकर रह गई थे। कालान्तर के गीतकारों ने छायावादी गीतकारों के द्वारा छोड़ी गई पारदर्शी देह को अंचल जी के शब्दों में

"कायिक भराव" प्रदान किया। गीत भोगे जाने वाली मानव अनुभूतियों से अलग हटकर देह-सौंदर्य का चाटुकार और मनुष्य की आस्था से अलग संदेहास्पद बन गया। इन जटिलताओं से अलग हरि ठाकुर ने अपने गीतों में कुंठा से अलग हटकर मुक्त गगन के लिए छटपटाहट व्यक्त की :-

फैल सकूँ उजियाला बनकर,
ऐसा मुक्त गगन दो।
अंधियारे के पिंजरे से,
कब तक प्रकाश का तोता।
रटे हुए जीवन की बोझिल,
साँस रहेगा ढोता।
बगरा दे हर गंध सुमन की
ऐसा मुक्त पवन दो

मुक्त गगन की खोज में निकला कवि हार-जीत के बीच आत्म अन्वेषण भी करता है। जीवन के प्रति अनास्था से आकण्ठ डूबे बोध के बीच आशा के स्वप्निल प्रभात का अवगाहन करता है। उसका यह क्षण अछूता आस्वाद देता है :-

कौन रात ऐसी जो बीत नहीं जाती है,
कौन साँस ऐसी जो बीत नहीं जाती है।
कौन पंथ ऐसा जो अंतहीन होता है,
मेरे ओ थके पाँव एक चरण और चलो।
स्वप्न रूको तुम भी तो मेरे हम राही हो,
सत्य-जन्म के तुम ही आखरी गवाही हो,
ओ मेरे सपने तुम एक बार और छलो।

कवि पर समय और स्थितियों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। आजादी की लड़ाई में शरीक होने वाला कवि, परिवारिक वातावरण में आजादी की लड़ाई महसूस करने वाला कवि अपनी लेखनी में भी मनुष्य की आजादी के लिए यदि संघर्षरत हो

तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए। इसे पारिवारिक संस्कार से जोड़कर देखना चाहिए। आजादी के आते-आते प्रगतिवादी संस्कार भारतीय समाज पर कहीं न कहीं अधिक गहराई से आच्छादित था। एक ओर भारतीय मनुष्य की कुंठा का राग अलापा जा रहा था और मनुष्य की टूट, फ्रायडियन थियरी पर आधारित काम की अन्तर्ज्वाला का बाह्यीकरण और शब्द के माध्यम से मनुष्य के बदले अर्थों की खोज की जा रही थी, तब हरि ठाकुर का संघर्ष इन सबसे अलग मनुष्य को मनुष्य की तरह देखने में व्यस्त था :-

गीत बदले, शब्द बदले,
शब्द के ये मायने भी।
और अब मैं ये पुराने स्वर
बदलना चाहता हूँ।

शब्द और स्वर के माध्यम से मनुष्य को मनुष्य की तरह देखने की ललक ने शोषण के चक्र में पिसते हुए मनुष्य का दर्शन कराया। शोषण और उपेक्षा का विरोधी स्वर यूँ मुखरित हुआ :-

विप्लवों के होंठ पर मैं गीत बनकर छा रहा हूँ,
शोषितों की जिन्दगी का गीत बनकर आ रहा हूँ।
शोषित की कराहों का एक दीपक राग हूँ मैं।
आग हूँ मैं॥

शोषक की सही पहिचान भी जरूरी है। और, कवि अत्यन्त स्पष्टता से इस पहचान को शब्द देता है। वह महसूसता है कि सत्ता और व्यवसाय दोनों ने मिलकर शोषण का जाल फैलाया है जिसमें बिंधकर मनुष्य रह गया है। जरूरी यहाँ यही कि इस जाल को काटा जाए और तभी कवि कह उठता है :-

यह किसने मुझे पुकारा है ?
फिर आसमान क्यों लाल हुआ -
क्यों इन्कलाब का नारा है ?

शोषण का नंगा नाच
अभी भी रूप बदल कर जारी है
क्यों हर व्यापारी अफसर है
या हर अफसर व्यापारी है।
दोनों की मिली भगत से ही
डूबा सौभाग्य सितारा है।

वह इस झूठी व्यवस्था, लहू, चूसने वाली सत्ता और व्यापारी की सांठ-गांठ को तोड़ देना चाहता है, किन्तु दूसरी और नए ढंग से, नई रीति नीति के द्वारा शोषण विहीन समाज का निर्माण करना चाहता है। इसलिए वह पर्वतों के सामने भी झुकना नहीं चाहता :-

साँस में तूफान लेकर, गीत के हर शब्द में स्वर का
नया अभिमान लेकर।
चल रहा हूँ नव सृजन का राह है, मेरे हृदय में
आग है मेरे हृदय में।
रूक नहीं सकता अभी मैं,
पर्वतों के सामने भी झुक नहीं सकता अभी मैं,
सुबह की पहली किरण की माँग है मेरे हृदय में,
आग मेरे हृदय में।

वस्तुत: हरि ठाकुर स्वतंत्रता के बाद इन्कलाब के कवि हैं। स्वतंत्रता के पहले देश की आजादी दिलाने का उद्देश्य था, तो स्वतंत्रता के बाद मनुष्य की शोषण से मुक्ति दिलाने की अवधारणा पल्लवित एवं पुष्पित हुई और इस अवधारणा से आपूरित हरि ठाकुर की कविताएँ पूरी तरह इन्कलाब को जीती हैं। संभवत: इसीलिए कवि कहता है :-

जनता का राज होगा,
जनमत बदल के देखो ।।

या

यह समाज वैषम्य नींव पर
खड़ा नहीं रह सकता
दरिद्रता के इस कलंक को
मनुज नहीं सह सकता ।।

इस इन्कलाब के कवि के भीतर एक अद्भुत बात छुपी है और वह यह कि वह बड़ा आस्थावान है। लगता है उसकी आस्था ही उसे नए-नए प्रयोगों तथा संघर्ष की ओर ले चलती है :-

कितनी दूर बिहान और है, दीपक जलकर देख
कैसे कटती रात नहीं, करवटें बदल कर देख
हिम्मत खोकर बैठ गया, क्यों पथ में तू राही
तेरे सिरहाने मंजिल है, नजर बदल कर देख ।।

मैंने पहले जिस बात का उल्लेख किया है कि हरि ठाकुर पर कुछ कह देना असंभव है किन्तु यहाँ आकर अनुभव कर रहा हूँ कि एक बात जब तक प्रगति-यात्रा के संदर्भ में निर्भीक रूप से कही जा सकती है कि हरि ठाकुर मनुष्य के शोषण, जुल्म, प्रतिकार, उपेक्षा, उत्पीड़न के विरूद्ध संघर्षशील किंतु अत्यधिक आस्थावादी कवि हैं। उनकी कविता का केन्द्र आनास्थावादी कुंठित मनुष्य कभी नहीं रहा है। आगे चलकर 'लोहे का नगर' में भी इसी धारणा को प्रतिफलित होता हुआ देख सकेंगे।

हिन्दी कविता जिन दिनों वर्जनाओं के तिरस्कार के लिए कटिबद्ध अकविता के आंदोलन में लिप्त थी तब कुछ कवि अन्दर ही अन्दर महसूस कर रहे थे कि यह सच है कि आधुनिक मनुष्य मशीनी सभ्यता का गुलाम बनकर रह गया है, व्यवस्था पूरी तरह भ्रष्ट हो गई है, भाषा के सारे अर्थ बासी हो गए हैं, भाषा के साथ ही साथ मनुष्य का रिश्ता खतम हो गया है। कुल मिलाकर स्थित यह थी कि मनुष्य नई-कविता में लघु होकर पूरी तरह मिट चुका है था तथा नई-कविता के बाद जिस मनुष्य को प्रस्तुत किया जा रहा था वह अपनी स्थित से अनभिज्ञ, परित्यक्त, एलिमिएटेड था और अपने को 'जांघ और जीभ' के बीच तलाश रहा था। इस सम्पूर्ण त्रासदी के

बीच कहीं न कहीं उस मनुष्य की खोज जरूरी थी, उस मनुष्य की जो पूरी तरह मनुष्य हो, जिसमें मनुष्योचित सभी गुंण हो और जो अपनी स्थितियों के सही समझ के साथ संघर्ष कर सके। खोज की इसी प्रक्रिया ने युवा लेखन को जन्म दिया। कहना न होगा कि युवा लेखन का सबसे पहला संग्रह 'लोहे का नगर' है। इससे भी ज्यादा यह कहा जा सकता है - वह युवा लेखन की प्रत्यूष बेला का भास्कर किरण है। श्रीराम वर्मा ने कल्पना में 'लोहे का नगर' पर चर्चा करते हुए नागरिक कविता की बात उठाई है। उनकी मान्यता है कि 'लोहे का नगर' में नागरिक कविताएँ संग्रहित है। नागरिक शब्द राजनीति से लिया गया है। तात्पर्य यह कि नागरिक वह व्यक्ति है जो नागरिकता के बोध से मंडित हो। किन्तु साहित्य में नागरिक शब्द का अर्थ थोड़ा बदल जाता है। नागरिक कविताएँ, वे कविताएँ जो आम नागरिक की पीड़ा, संत्रास, कुंठा, सोच-समझ, अकांक्षा, भाषा को उसके सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर सके। इस तरह यह कहा जा सकता है कि हिन्दी में हरि ठाकुर ही अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने कविता से ज्यादा इस देश के समान्य नागरिक की वाणी को महत्व दिया है। उस नागरिक का परिवेश, संस्कार, जातीय स्मृतियाँ, मिथ आदि ज्यों का त्यों 'लोहे का नगर' में आ समाये है :-

पिस गई मेंढ़ों की रीढ़,
खेतों पर रोप दी सपाट शक्ल
उजड़ गए मिट्टी के घर
माता देवाला और गुड़ी
धरती की कोख में झोंक दी गई
लोहे की छड़ें, सीमेंट और ईंट और बोल्डर्स
रंभाती नदियों के तोड़ दिये गए घुटने --

तमाम प्राचीन संस्कार, माधुर्य, कोमलता, उत्साह, आवेश समाप्त हो गए। क्योंकि –

नट से कसे बोल्ट की तरह आदमी
किसी न किसी मशीन में फिट है

और दूसरी ओ
हरामखोरों को जीने के अनेक सुभीते हैं
वे बन सकते हैं ठसके से नेता
जन नायक
जिस शासन में
पारसी थियेट्रिकल कम्पनी के रिटायर्ड विदूषक
बना दिए जाते हैं
पब्लिक सर्विस कमीशन के मेम्बर
या निगरानी आयोग के आयुक्त ....

और भी बहुत कुछ उस संग्रह में जिस व्यवस्था ने मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने दिया, उस व्यवस्था के सभी पहलुओं की ओर इशारा है। मात्र इशारा ही नहीं है वरन् एक नागरिक का आदमजात आक्रोश है। आक्रोश जो किसी झटके की तरह न होकर अपने पूरे तेवर और स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्ति पा सका है।

इतना सब होते हुए भी मनुष्य के उज्जवल भविष्य के प्रति आस्था समाप्त न होकर इन शब्दों में व्यक्त होती है :-

मेरी प्रार्थनायें
उस अनाम सुबह के लिए है
जिसमें सूर्य एक फूल की तरह खिले
और उजाला गंध की तरह फैल जाये ॥

मनुष्य के प्रति आस्था, उसके हर संघर्ष के साथ जुड़कर चलने की ललक बहुत ही कम कवियों में मिलती है। इतना ही नहीं, इस खूबी या कमजोरी के बावजूद हरि ठाकुर टाइप्ड होने से सतत बचते रहे हैं। संभवत: यह भी हरि ठाकुर की अपनी विशेषता है।

● ***बिलासपुर (छत्तीसगढ़)***

हरि ठाकुर, जिनके साथ न्याय नहीं हुआ

■ *गिरीश पंकज*

हरि ठाकुर नहीं रहे। एक बरगद ढह गया। इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य की त्रिवेणी लुप्त हो गई। वैचारिक-विमर्श का एक सार्थक केंद्र उजड़ गया। छत्तीसगढ़ के नवजागरण आंदोलन का मसीहा और साहित्यिक-सांस्कृतिक उन्मेष का पितामह महाप्रयाण कर गया। त्यागमूर्ति ठा. प्यारेलाल सिंह का सपूत चल बसा। चला गया वह शख्स, जो कदम पर छला गया। राजनीति ने सबसे ज्यादा छल किया जिसके साथ। राज्य बनने के बाद तो सर्वाधिक धोखाधड़ी जिस शख्सियत के साथ हुई, उसका नाम है हरि ठाकुर। उनके जाने के बाद राजनीति तथाकथित शिखर पर बैठे लोग नकली आँसू बहाते हुए फरमा रहे हैं कि श्री ठाकुर एक महान साहित्यकार थे। उनके योगदान को भूल पाना मुश्किल है।

नवगीत आंदोलन के दौर में भी हरि ठाकुर सक्रिय थे। गोवा मुक्ति आंदोलन में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही। आजादी के संघर्ष में युवा हरिनारायण सिंह ठाकुर की भूमिका से भी सभी जन परिचित हैं। एक सजग कलमकार और आंदोलनकारी हरि ठाकुर को देखकर नई पीढ़ी के वे लोग बड़े प्रोत्साहित होते थे जिनके मन में सामाजिक परिवर्तन और जागरण की तड़प है। हरि ठाकुर मुझ जैसे अकिंचन साहित्यिक-सांस्कृतिक-सामाजिक कर्मी के लिए सदैव पाथेय रहे। दूसरे सौभाग्यशाली लोगों की तरह मुझे भी उनका भरपूर स्नेह मिला। मार्गदर्शन मिला। न जाने कितने मौकों पर उनके साथ रहा। उनको देखा-परखा। वे मेरी आस्था के जीवंत केंद्र थे। इतिहास की सजीव पुस्तक थे। हजारों घटनाओं के प्रामाणिक ज्ञाता। विद्रोही कवि थे हरि ठाकुर। उनकी रचनाओं में ''धान के कटोरा'' की पीड़ा थी। ''नए स्वर'' लेकर साहित्य की दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले ''छत्तीसगढ़ के रत्न'' ने न जाने कितने ही ''गीतों के शिलालेख'' रचे। ''जय छत्तीसगढ़'' का घोष किया। ''अंधेरे के खिलाफ'', ''मुक्ति का गीत'' गाया। ''लोहे के नगर'' में रहते हुए भी श्री ठाकुर ''नए विश्वास के बादल'' बनाते रहे।

''शहीद वीरनारायण सिंह'' हो या ''ठाकुर प्यारे लाल सिंह'', जाने कितनी विभूतियों के बारे में उन्होंने जानकारी दी। ''प्राचीन कोसल अर्थात् छत्तीसगढ़ राज्य का आरंभिक इतिहास'' हो चाहे ''छत्तीसगढ़ी गीत अऊ कविता'', हरि ठाकुर जी ने कदम-कदम पर ''छत्तीसगढ़ गाथा'' प्रस्तुत की। उनकी लेखनी को ''सुरता के **चंदन'' कहा** जा सकता है, जिसकी महक हमेशा बनी रहेगी। पत्रकारिता में भी हरि **ठाकुर ने उल्लेखनीय** काम किया था। कभी ''नवज्योति'' जलायी, कभी ''छत्तीसगढ़ी **केसरी'' बन** गए कभी ''साम्ययोग'' का दर्शन दिया, कभी ''संज्ञा'' बने तो कभी **''राष्ट्रबन्धु'' हो** गए।

हरि ठाकुर जी बड़े कवि थे। वैसे ही बड़े जैसे कोई भी महाकवि होता है। दुर्भाग्य है उन्हें कविता लेखन के साथ वह कला नहीं आई जो आजकल बड़े-बड़े पुरस्कार-सम्मानों के लिए जरूरी होती है। वे स्वाभिमानी व्यक्ति थे। सत्ता के आगे झुके नहीं। खुद सत्ता उनके आगे झुकती थी। जागरण का गीत गाने वाला व्यक्ति झुक भी नहीं सकता। सरलता-सहजता एक बात है लेकिन आत्म समर्पण दूसरी बात। यही कारण है कि हरि ठाकुर के सम्मान की निर्णायक भूमिका निभा सकने के बावजूद सत्ता के दलाल और साहित्यिक माफियाओं ने ऐसा नहीं किया। साफ कहूँ तो जानबूझ कर अनदेखी करते रहे। वैसे हरि ठाकुर भी ऐसे लोगों को भलीभाँति पहचानते थे। इसीलिए तो अपनी एक रचना में वे कहते हैं -

करही कोन हमर कल्यान,
अफसर, नेता बदिन मितान
जय गंगान।
गाँधी जी के जै बोलवाय
वो शासन दारू बेचवाय
जय गंगान।
शासन तो हे शंखढपोर
हम देखत हन दाँत निपोर
जय गंगान।

ऐसी अनेक कविताएँ हैं जो व्यवस्था के मुँह पर तमाचा जड़ती हैं। ऐसे में

व्यवस्था उन्हें कैसे सम्मानित कर सकती थी ? हाँ, अगर वे नई कविता, कलावादी कविता, आम आदमी के पल्ले न पड़ने वाली कविताएँ लिख रहे होते तो जरूर सम्मानित हो जाते। लेकिन हरि ठाकुर तो कबीर की तरह ही रट-पट कहने वाले थे। जैसे -

छत्तीसगढ़ के भाग न ठागे,
हालचाल गड़बड़हा हे
हर शासन मा शोषण हो थे
हर नेता लड़बड़हा हे।

बहुत बड़ी बात कहते हैं ठाकुर जी। राज्य बन गया है। एक सपना पूरा हो गया है लेकिन हालत सबके सामने है। कैसी हालत है ? कैसे चेहरे हमारे सामने हैं ? जरा देंखे, हरि ठाकुर क्या कहते हैं -

ये सूरज नो हे जेकर बर
पुरखा मन बलिदान करिस

इसीलिए हरि ठाकुर जी आह्वान करते हैं कि -

शोषणमुक्त करे बर
छत्तीसगढ़ ला फेर जगाना है।

उपर्युक्त गीत भले ही पुराना है लेकिन आज बेहद प्रासंगिक हो गया है। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परम्परा के उन्नायक, आधुनिक इतिहास के नायक, छत्तीसगढ़ी साहित्य के विधायक और माटी की पीड़ा और श्रृंगार के अमर गायक को ईमानदार और जुझारू पीढ़ी की ओर से शत्-शत् नमन् करता हूँ, इन पंक्तियों के साथ कि -

राज्यसत्ता ने अगर वंचित किया सम्मान से,
क्या हुआ, आदर मिला उनको हरेक इंसान से।
काम जितने थे तुम्हारे वे धरोहर बन गए,
भावी पीढ़ी को बताएँगे सदा हम शान से।

● ***संपादक, सद्भावना दर्पण और***
पूर्व सचिव, छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन

पर महकते रहेंगे सुरता के चंदन

■ *रमेश नैयर*

छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी के सम्मान के लिए निरंतर जूझते रहे हरि ठाकुर चले गए। उनका पार्थिव शरीर मंगलवार को पंचतत्त्व में विलीन हो गया। परंतु उनकी यादें, उनका कृतित्व और छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के लिए उनका बहुआयामी संघर्ष याद रहेगा। छत्तीसगढ़ के इतिहास में आदर के साथ दर्ज किया जाएगा। छत्तीसगढ़ के वह आराधक थे। जितना प्यार उन्होने छत्तीसगढ़ से किया उतना शायद अपने परिवार से भी नहीं किया।

ठाकुर साहब के साथ चार दशकों से भी अधिक समय के लगभग सतत संपर्क से कौंधती यादों को एक त्वरित लेख में समेटना असंभव-सा है। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के किस पहलू को याद किया जाए और किसे किनारे रखा जाए ? पाँचवें और छठवें दशक में हरि ठाकुर एक यशस्वी कवि के रूप में स्थापित हो रहे थे। स्वातंत्र्य चेतना, लोक-सेवा और जन आंदोलनों के संस्कार उन्हें विरासत में मिले थे। त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह के संस्कार परिवार में उन्होंने ही सबसे ज्यादा सहेजे थे। उन मूल्यों को उन्होने जीया था। सरकारी पद मिले, उनकी लेखनी, वाणी और वैचारिक सक्रियता को बाँधने के लिए सत्ता ने कुछ आकर्षक आफर भी दिए, परंतु वह किसी समझौते को तैयार नहीं हुए। उन्होने जो रास्ता चुना था, उसमें किसी प्रकार के समझौते को कोई स्थान ही नहीं था। छठवें दशक के अंतिम वर्षों में अपने जीवन दर्शन और अपने सिद्धांत को उन्होने एक पंक्ति में समेट कर लिखा था, 'मैं उजाले की तरह साफ हूँ, इसलिए अंधेरे के खिलाफ हूँ।' सुविधा से अधिक पसंद था उन्हें संघर्ष। आत्मनिवेदन करते हुए उन्होने लिखा 'संघर्षों में जीवन और खरा होता है। बड़ा वही जो अपने पाँव खड़ा होता है।'

हरि ठाकुर के सखा और वैचारिक सहयोगी बच्चू जांजगीरी, आत्मीय मित्र श्यामलाल चतुर्वेदी तथा श्रेष्ठ कवि नारायणलाल परमार की लेखनी ने छत्तीसगढ़

में बौद्धिक गरमाहट बनाए रखा। हरि ठाकुर उन दिनों समाजवादी पार्टी के सक्रिय सदस्य थे। आचार्य दांडेकर के निकट संपर्क में थे। डॉ. राममनोहर लोहिया से घनिष्ठता थी। परंतु उनके मन-प्राण पर गहरी छाप थी बाबू जयप्रकाश नारायण की। 1974 की समग्र क्रांति के बाद तो काफी बड़ी भीड़ जयप्रकाश जी के पीछे हो गई थी, परंतु हरि ठाकुर जेपी के सक्रिय सिपाही उन दिनों में थे जब उन्होने पं. जवाहरलाल नेहरू को चुनौती दी थी। अपने पिता ठा. प्यारेलाल सिंह से जयप्रकाश के प्रति अविचल निष्ठा भी उन्होने विरासत में पाई थी। जेपी से प्रभावित होकर ठा. प्यारेलाल सिंह जब भूदान के प्रति समर्पित हो गए तो हरि ठाकुर भी नागपुर से प्रकाशित हिंदी साप्ताहिक 'साम्ययोग' का संपादन करने लगे।

हरि ठाकुर रायपुर के जहाज के पंछी थे। नागपुर में उन दिनों पत्रकारिता में कैरियर और नाम दोनों लिहाज से बेहतर संभावनाएँ थी। परंतु जहाज के पंछी को तो रायपुर लौटना था। वह इसलिए भी कि छत्तीसगढ़ का दर्द उन्हें सोते-जागते पुकारता था। अपनी काव्य प्रतिभा को उन्होने छत्तीसगढ़ की व्यथा को व्यक्त करने में खपाया।

छत्तीसगढ़ के असीम दर्द को व्यक्त करने में काव्य कर अपनी सीमाएँ थी। हरि ठाकुर ने पत्रकारिता का सहारा लिया। रायपुर से साप्ताहिक राष्ट्रदूत का प्रकाशन संपादन किया। यह भी आर्थिक दृष्टि से घाटे का सौदा था। हरिठाकुर अपने सीमित साधनों को इसमें खपाते रहे। साहित्यिक पत्रिता 'संज्ञा' का खर्च भी सिर पर ओढ़ लिया। एक अतिरिक्त घाटे का काम शुरू किया लेखक सहयोगी प्रकाशन।

जयप्रकाश नारायण से हरि ठाकुर की निकटता सभी जानते थे। जब 1977 में जनता पार्टी की केंद्र और मध्यप्रदेश में भी सरकार बनी तो हरि ठाकुर को एक बार फिर सत्ता केंद्र ने सम्मोहक निमंत्रण दिया।

● *सलाहकार संपादक, दैनिक भास्कर, रायपुर*

काव्य-यात्रा का एक पड़ाव "धान का कटोरा"

■ *विश्वेन्द्र ठाकुर*

छत्तीसगढ़ श्री हरि ठाकुर की काव्य-भूमि ही नहीं जीवन और संघर्ष की कर्मभूमि है। त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह की पीढ़ी का निर्वाह करने के कारण ही हरि ठाकुर को विशाल जनसभाओं में पितामह की संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है। प्रस्तुत संग्रह में कवि का यह स्वरूप द्दष्टव्य है। 'धान का कटोरा' लिखकर छत्तीसगढ़ के प्रति पूर्ण समर्पित होकर छत्तीसगढ़ के कवि सेनानी के रूप में हरि ठाकुर प्रथम पंक्ति में खड़े हैं। वे इस बात की पुष्टि करते हुए कहते भी हैं कि साहित्यकार के एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में मशाल होना चाहिए। मशाल जनजागरण और क्रांति का प्रतीक है।

श्री हरि ठाकुर के नजदीकी होने के नाते मुझे उनके साहित्यकार व्यक्तित्व के सत्संग का लाभ मिला है। व्यक्ति तथा समाज संबंधी भावधारा में डूबने का अवसर मिला है। छत्तीसगढ़ इस व्यक्ति में इतना रच-पच गया है, कि लगता है कि उसका निजत्व कुछ भी नहीं है।

एक दिन हरि भाई ने अपनी डायरी निकाली और 'बिन्नीबाई' शीर्षक कविता सुनाते समय कहा- भाई यह तुम्हारे ही मुहल्ले सोनकरपारा की सब्जी बेचनेवाली का चित्रण है जिसने अपनी पूरी सम्पत्ति बेचकर अस्पताल को दस लाख रुपये दान कर दिए हैं, यह है। छत्तीसगढ़ में ऐसा करेक्टर कहीं नहीं मिलेगा। हवाला का दान लेने वाले तो देश-भर में मिल जाएँगे।

प्रसंगवश 'मनीराम' कविता सुनाते हुए कहा सौ साल बाद मनीराम को लोग याद कर रहे हैं, सागौन की रोपनी लगाने वाला पेड़ से सोना उगाने वाला पिथौरा के चपरासी मनीराम को तब छत्तीसगढ़ नहीं जानता था। ऐसा व्यक्तित्व अन्यत्र नहीं मिलेगा।

लार्सन एण्ड टुब्रो के सीमेंट उद्योग से प्रभावित गाँव का चित्रण जितने मार्मिक ढंग से हरि ठाकुर ने 'परसवानी के लोग' शीर्षक कविता में किया है, वह प्रभावशील काव्य-धारा में मील का पत्थर है। तमाम प्रसंगों से यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि कवि को कविता लिखने के लिए विषय-वस्तु की कमी नहीं हैं, केवल दृष्टि चाहिए, जो हरि ठाकुर में है।

पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय की छत्तीसगढ़ी रचनाएँ श्री हरि ठाकुर के नीजि संग्रहालय में आज भी सुरक्षित हैं। श्री हरि ठाकुर की बहुत-सी छत्तीसगढ़ी रचनाओं की धारा में आन्दोलनकारियों के लिए क्रांति का आह्वान रहा है। ये रचनाएँ सभा-जुलूस में सुनने को मिलती हैं, जैसे मुक्ति गीत। उन्होंने फिल्म के लिए भी लिखा है किन्तु उनका वास्तविक व्यक्तित्व 'धान का कटोरा' में झलकता है।

श्री हरि ठाकुर का कवि साहित्य को समाज का दर्पण ही नहीं, दिशा परिवर्तन की शर्त भी मानता है । साहित्य समाज में परिवर्तन लाने की अनिवार्य शर्त है। वे यथार्थ को उजागर करते हैं, वे प्रश्न करते हैं -

किसान अब का करही
कहाँ बोही, कहाँ लूही धान
किसान अब का करही।

आगे वे कहते हैं -

आँखी अपन उधार जी
घर ला अपन सम्हार जी

श्री हरि ठाकुर ने छत्तीसगढ़ की दुर्दशा का चित्रण किया है। भारत दुर्दशा के कारण मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्र कवि के रूप में सम्मानित किया गया है। हरि ठाकुर में भी वह ऊर्जा है उनके यथार्थ चित्रण की बानगी देखिए -

मन मर के हम जांगर टोरी।
अउर भरैं उन अपन तिजोरी॥
हमर जरत हे बोटी बोटी।
तेमा उन सेंकत हें रोटी॥

श्री हरि ठाकुर छत्तीसगढ़ के शोषण में सजग करने वाली प्रहरी कवि हैं, जब वे कहते हैं-

हमरे पतरी मा
जूठा चट्टैया मन
हमरे उपर करत हें राज
उन्कर साज बर
बेचावत हे हमर लाज।

तब वह विचलित हो उठते हैं।

श्री हरि ठाकुर को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने का गौरव प्राप्त है। उनके बगावत के स्वर की पहचान शहीद वीरनारायण सिंह जैसी अमर कृति में देखने को मिलती है। छत्तीसगढ़ में सन् 1857 की चिन्गारी सोनाखान की जमींदारी से फूटती है, जहाँ वीरनारायण सिंह ने सीधे-सीधे अँग्रेजों से टक्कर ली थी। श्री हरि ठाकुर ने इस चरित्र को उठाया और छत्तीसगढ़ में पहला राष्ट्रीय और वीर प्रबंध-काव्य का दर्जा देने का प्रयास किया।

'धान के कटोरा' में शोषण और उत्पीड़न का चित्रण मिलता है, यथा छत्तीसगढ़ महतारी के गोहार, छत्तीसगढ़ के भाग, लोटा धर के आने वाला, किसान अब का करही आदि। इससे यह तथ्य उजागर होता है कि छत्तीसगढ़ के राज्य बनने से ही मुक्ति मिल सकती है। हरि ठाकुर का राज्य जब भी बनेगा उसके निर्माता के रूप में उन्हें देखा जाएगा। छत्तीसगढ़ राज बर शीर्षक कविता में वें कहते हैं -

अब छत्तीसगढ़ राज बनाये बर, जीना अउ मरना हे।
पुरखा मन के सपना ला, अब हमला पूरा करना हे।
छत्तीसगढ़ महतारी, कब ले पारत हवै गोहार
मुक्त करौ बन्धन से, बोला टोरो कारागार।
टोरो टोरो कारागार॥

आरंभ में कहा गया है कि श्री हरि ठाकुर गीत विधा के हस्ताक्षर हैं। इस विधा में अलग से संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनमें **सुरता के चंदन** प्रमुख है। छत्तीसगढ़ी

में गीत की परम्परा को वे आगे बढ़ाते हैं और गीत की रागात्मकता के स्वर को महानदी पैरी, खारून की धारा में बहता हुआ देखते हैं, प्रकृति प्रेम और गीत का चोली दामन का संबंध है -

उठ जाग जाग खारून नदी
अद्‌भुत तोर राम कहानी हे ,
लहरा मा भरे जवानी हे ।

भिनसरहा का चित्रण देखिए -

जोत कलस छलके लगिस
बूँके रोरी रंग
चटके लागिस झूम के
कली-कली के अंग ।।

मूसलाधार वर्षा का वर्णन देखिए -

मूसर अस बरसत हे धार
चारों खुँट छाये अँधियार
बन्द हवै सुरूज के कपाट
का कहिब बादर के ठाट

बसंत में -

सुन सुन के कोयल की बोली
छाती मा लागत हे गोली

छत्तीसगढ़ी बड़ी मधुर भाषा है, बशर्ते शब्दों के चयन में गंभीरता हो बनी सस्ती लोकप्रियता एवं प्रसार लिप्सा ने छत्तीसगढ़ के अधिकांश कवि गीतकार इसी सस्ती लोकप्रियता के शिकार हैं, हरि ठाकुर इनसे कोसों दूर हैं । वे संक्षिप्त ध्वन्यात्मकता तथा नित नवीन विधा के पक्षधर हैं -

बोइर कड़हा -
मनखे अड़हा

कोन काम के ?

या

छत्तीसगढ़ के मूड़ मूड़ैया
जनता उप्पर चढ़ै पिठैया
कौड़ी के पैया नून बिसैया

एक बात और उनके दोहा शतक से छत्तीसगढ़ साहित्य की श्रीवृद्धि हुई है। दोहा सशक्त एवं गंभीर छंद हैं। देखने में छोटे लगें पर घाव करें गंभीर। हरि ठाकुर के दोहों में रस की विविधता तो हैं ही, चिन्तन और दार्शनिक पुट भी हैं -

मन काजर के कोठरी, का तन ला उजराय।
मन उज्जर हो जाय तो, जग अंजोर हो जाय ॥
भरे पेट के कोटना, जांगर धरे पोटार।
वो अलाल के जनम ला, बेर बेर धिक्कार ॥
चिखला माटी सीत अउ धाम जोन डरिये।
अइसन कायर पूत घर, लक्ष्मी कभू न आय ॥

इनके अतिरिक्त रस विभोर करने वाले दोहे भी अनेक हैं, जैसे -

समझ सकै कोनो नहीं इन नयनन के भेद।
कामदेव मानो रचे दू अक्षर के वेद ॥

छत्तीसगढ़ के सम्मान के प्रति समर्पित हरि ठाकुर स्वंय को सम्बोधित करते हुए कहते हैं -

चार दिन के जिन्दगी, धन वैभव दिन चार।
भज ले सीताराम मन कर ले कुछु उपकार ॥

परोपकार के बिना जीवन व्यर्थ है। ऐसे निर्मल विचारों और भावों के धनी हरि ठाकुर की यह कृति संवेदनशील पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

● ***प्रोफेसर कॉलोनी रायपुर (छ.ग.)***

छत्तीसगढ़ी गीत अउ कविता

■ ***देवी प्रसाद वर्मा***

सन् 1900 के पूर्व हमें छत्तीसगढ़ी का कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। काव्योपाध्याय हीरालाल जी का ग्रंथ 'छत्तीसगढ़ी व्याकरण' एक मात्र अपवाद है। यह ग्रंथ सन् 1885 ई. में लिखा गया। छत्तीसगढ़ी का प्रथम ग्रंथ होते भी इसे यथेष्ट सम्मान और महत्व मिला। छत्तीसगढ़ी का यह सौभाग्य ही है कि जब खड़ी बोली का कोई प्रामाणिक व्याकरण उपलब्ध नहीं था उस समय छत्तीसगढ़ी का व्याकरण लिखा जा चुका था। यह इस बात का भी प्रमाण है कि छत्तीसगढ़ी में एक समृद्ध भाषा बनने के गुण उन्नीसवीं शताब्दी में ही आ गए थे और उसके व्याकरण लिखने की आवश्यकता प्रतीत हुई थी।

किन्तु दुर्भाग्य है कि सन् 1902 ई. के पूर्व हमें छत्तीसगढ़ी का कोई प्रकाशित अथवा अप्रकाशित साहित्य उपलब्ध नहीं होता। छत्तीसगढ़ी में साहित्य सृजन की प्रेरणा सर्वप्रथम पं. लोचन प्रसाद पांडे से ही हमें प्राप्त होती है। श्री नंदकिशोर तिवारी के एक शोधपूर्ण निबंध के अनुसार पं.लोचनप्रसाद पांडेय को ही छत्तीसगढ़ी के प्रथम कवि तथा नाट्यकार स्वीकार करना पड़ता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं.लोचन प्रसाद पांडेय ने सन् 1904 में हिन्दी मास्टर नामक पत्रिका में सर्वप्रथम एक छत्तीसगढ़ी नाटक प्रकाशित कराया, जिसके दो ही दृश्य प्रकाशित हो सके। उन्होंने उसी समय छत्तीसगढ़ को जागृति का संदेश भी दिया और कविताएँ भी लिखी।

उनकी कविता की दो पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :-

सुतत हवव निंद के भोर
हाड़ा बटौवा ले गे कोड़

छत्तीसगढ़ी के प्रथम काव्य-प्रणेता पं. लोचन प्रसाद जी पांडेयं ने ही थे, इसमें सन्देह नहीं। वे छत्तीसगढ़ी के प्रथम नाट्यकार भी थे। छत्तीसगढ़ को जागरण का प्रथम सन्देश पं. लोचन प्रसाद पांडेय ने ही दिया। 'छत्तीसगढ़ से एक बात' शीर्षक लेख

1904 में प्रकाशित हुआ था जो इस बात को सिद्ध करता है कि वे छत्तीसगढ़ जागृति के प्रथम संदेश वाहक थे।पं. लोचन प्रसाद पांडेय ने 'छत्तीसगढ़ी गीता प्रवेश' भी लिखा था।संभवतः यह 1910 के आसपास की बात है।

सन् 1915-16 के लगभग पं. सुन्दरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ी में 'दानलीला' काव्य-ग्रंथ का प्रणयन किया और इस ग्रंथ ने छत्तीसगढ़ी भाषा को सर्वप्रथम काव्य की उच्चतर भूमि प्रदान की।इस ग्रंथ के प्रकाशन के बाद छत्तीसगढ़ी में साहित्य-सृजन को अत्यधिक स्फूर्ति मिला।पं.शुकलाल प्रसाद पांडेय ने सन् 1918 में 'भूल भुलैया' ग्रंथ लिखकर इस छत्तीसगढ़ी काव्य को लोकप्रिय बनाने का सर्वाधिक प्रयास किया।ऐसा ही प्रयास स्व. कोदूराम जी दलित ने किया।श्री श्यामलाल चतुर्वेदी का प्रयास भी इस दिशा में सराहनीय है।श्री प्यारेलाल जी गुप्त ने भी छत्तीसगढ़ी में कुछ कविताएँ लिखी किन्तु वे साहित्य की निधि है -लोस्तर पर वे पहुँच नहीं पाती।

इस संदर्भ में हम स्व. पं. कुंजबिहारी चौबे की छत्तीसगढ़ी कविताओं को भूल नहीं सकते।उनकी कुछ कविताओं का संकलन एवं सम्पादन भाई हरिठाकुर ने किया है जिसमें संक्षेप में स्व. चौबेजी की जीवनी भी है।भाई हरिठाकुर ने चौबेजी के विषय में लिखा है - 'कुंजबिहारी चौबे छत्तीसगढ़ी के पहले कवि हैं जिनकी कविताओं में राजनीतिक-विद्रोह का स्वर प्रज्जवलित हुआ है।बख्शीजी ने भी चौबेजी को असाधारण प्रतिभा का कवि कहा है।

संक्षेप में छत्तीसगढ़ी काव्य-परम्परा को नई दिशा और मोड़ देने वाले सार्थक नामों की चर्चा ऊपर की गई है।इन्हीं सार्थक नामों में एक और नाम जुड़ता है - हरिठाकुर का। प्रस्तुत छत्तीसगढ़ी काव्य-संग्रह में हरिठाकुर ने छत्तीसगढ़ी काव्य को नया-शिल्प दिया है, साथ नयी विषय-वस्तु की खोज भी की है।गीतों में जो प्रयोग उन्होंने किए हैं वे निःसंदेह छत्तीसगढ़ी काव्य की गरिमा की वृद्धि करते हैं।हरिठाकुर की कला-कला के लिए कला नहीं है।इस संग्रह का आरम्भ दो 'बादर' गीतों से होता है।इन दोनों गीतों में उन्होंने प्रकृति दृश्यों के माध्यम से मनुष्य के कष्टों और दुखों को चित्रित किया है।

हरिठाकुर आस्थावादी कवि हैं।वे सदैव संघर्षों से जूझने की बात दुहराते

है।'तूफानी के फन' नाथने की बात हरिठाकुर जैसे कवि ही कर सकते हैं जिनके स्वर में पौरुष का ओज भरा है :-

धरौ कुदारी रापा टुकना
नागर थामौ कांध मा
नरवा नदिया के पानी ला
छेंकव जुरमिल बांध मा
माँग सवांरौ धरती मां के,
नाथौ फन तूफान के

हरिठाकुर के गीत कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से नए-नए प्रयोगों से भरे हैं ।वे कहीं रूढ़ नहीं है ।यह गीत हिन्दी के नवगीतों के मुकाबले पर है –

सुन सुन रसिया
तार आंखी के काजर लग हंसिया

अथवा–

झुंझकुर झुंझकुर संझा आय
मुंह ओरमाये और लुकाय

हरिठाकुर ने अपने कुछ गीतों को लोक-धुनों में गूंथा है -

गोंदा फुलगे मोर राजा
गोंदा फुलगे मोर बैरी
छाती म लागय बान

अथवा–

आज अधरतिहा
मोर फुल बगिया में आज अधरतिहा

इन दोनों गीतों में जहाँ छत्तीसगढ़ीय श्रृंगार भावना का प्रस्फुरण है वहीं यहाँ के लोक-गीतों की सरल भंगिमा भी है ।'गोंदा फूलने' की रमात्मक, रागात्मक अभिव्यक्ति छत्तीसगढ़ी में ही संभव है ।हरिठाकुर के गीतों ने छत्तीसगढ़ी की माटी की

सुगंध को अभिव्यक्ति देने का सदैव प्रयास किया है।यह प्रयास दोनों स्तरों पर हुआ है -सामाजिक स्तर पर और आत्मनिष्ठ स्तर पर भी।

'टोनही अस झूपत ये बिरबिट रतिहा घलो पहा जाही ' ऐसी अभिव्यक्ति देने की क्षमता केवल हरिठाकुर की लेखनी में ही है।बिरबिट काली रात्रि का टोनही जैसे झूपने की भयानकता और संत्रास को व्यक्त करने में हरिठाकुर की लेखनी कैसे चूक सकती है ! हरिठाकुर एक ओर छत्तीसगढ़ की दुर्दशा का चित्र खीचते हैं -तो दूसरी ओर क्रांति का आव्हान भी करते हैं -

कइसे बारव दिया बतावव
नइये तेल अउ बाती
साँस के आरी जिनगी चीरय
गुंगवावत हे छाती
इहां लहू के फाग मचे हे,
जिनगी हे झखमारी।

इन स्वरों में कुंठा का स्वर तो हे किन्तु उससे अधिक आक्रोश का स्वर प्रबल है।बीच-बीच में वे इन तमाम संकटों, कष्टों और विसंगतियों से जूझने, संघर्ष करने का आव्हान बराबर करतें हैं -

शोषण अन्याय गरीबी से
सब जुर-मिल के अब लड़े चलौ
जागो छत्तीसगढ़ के जवान !

इस संग्रह की सबसे बड़ी उपलब्धि है। हरिठाकुर को अन्तिम किन्तु लम्बी कविता जो सन् 1958 के विलप्व के महान सेनानी, शहीद वीर नारायणसिंह पर उन्होने लिखी है। छत्तीसगढ़ी में यह अपने ढंग की पहिली कविता है जिसमें एक क्रांतिवीर के बलिपथ पर लहूलुहान होकर शहीद होने की ऐतिहासिक कथा है।इस कविता के छंद में प्रवाह के साथ ओजस्वी स्वर भी प्रज्जवलित होता चलता है -

धधके लगिस वीर बगाल
दिल्ली के रँग होगे लाल

माचिस रकत के होले फाग
आजादी के पहली राग
कांपिस अंग्रेजी शासन
डोलिस लन्दन के आसन
टूट परीन जब हमर जवान
भगिन फिरगी ले के प्रान
छत्तीसगढ़ भी ठोकिस ताल
अठरा सौ सन्तावन साल
गरजिस वीर नरायन सिंह
मेटिस सबे फिरंगी चिन्ह
ताल ठोंक के छाती तान
बढ़िस नरायनसिंह जवान
लिहिस हाथ म जब बन्दूक
करिस निशाना वो बेचूक।

मुझे यह स्वीकार करने में तनिक भी झिझक नहीं कि छत्तीसगढ़ी में भी वीर रस के ओजस्वी स्वरों को अभिव्यक्ति देने की अद्‌भुत क्षमता है।छत्तीसगढ़ी भी श्यामनारायण पांडेय देने की शक्ति रखती है -ऐसा मुझे लगता है।भाई हरिठाकुर के एक हाथ में क्रांति की मशाल और दूसरे में निर्माण की कला है।और इसीलिए उनसे हमें बहुत कुछ आशाएँ हैं।

अन्त में आदरणीय प्राचार्य श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' के इस कथन से अक्षरशः सहमति व्यक्त करता हूँ-''हरिठाकुर के गीत मन को एक अछूती चाहत से भर देते हैं और आस्वादन को ठहराव भी देते हैं।'' अंचल जी का यह कथन हरिठाकुर के हिन्दी गीतों पर जितना सटीक है उतना ही उनके छत्तीसगढ़ी गीतों पर भी।

● ***कार्यकारी अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, रायपुर***

हरि ठाकुर के पत्रों में छत्तीसगढ़ी के लिए आसक्ति

■ *रमेश चंद्र महरोत्रा*

श्री हरि ठाकुर अपने छोटों को प्रेरणा देने की दृष्टि से कितने बड़े थे, इस का निर्धारण मुझ से अधिक कोई नहीं कर सकता। उन का पत्र पाते ही मेरे अंदर ऊर्जा के स्रोत फूट पड़ते थे। उस महान आत्मा ने अतिशय नम्र बन कर मेरे छत्तीसगढ़ी से संबंधित कार्यों के नाम पर मुझे आसमान पर बैठा रखा था। उन के आशीर्वादों का सिलसिला जनवरी 1972 में ही शुरू हो गया था, जब उन्होंने अपने 'राष्ट्रबंधु' के गणतंत्र-अंक में मेरा लेख 'छत्तीसगढ़ी पर भाषावैज्ञानिक दृष्टि' छापा था। यों उन के पत्र मुझे बीच-बीच में भी प्रेरित करते रहे - नमूने के लिए नीचे दिए गए मार्च 1993 और जनवरी 1997 के पत्र, लेकिन छत्तीसगढ़ राज्य बनने के कुछ पहले से तो उन की छत्तीसगढ़ी के उच्च पदारूढ़ होने के प्रति बढ़ती ललक और कसक ने उन की लेखनी से मुझे बहुत जल्दी-जल्दी प्रसाद दिलवाना प्रारंभ कर दिया।

''**मार्च 1993.** छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ी : भाषाई कार्य - आप के कुशल मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ी पर जो शोधकार्य हो रहे हैं, उस की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। हमारा सौभाग्य है कि इस विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान को आप - जैसे विद्वान की सेवाएँ प्राप्त हैं। विश्वास है कि भविष्य में भी छत्तीसगढ़ी पर होने वाले शोध-कार्यों को आप का समुचित मार्गदर्शन प्राप्त होगा।''

''**जनवरी 1996.** आप की प्रेरणा से और आप के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ी पर बहुत काम हुआ है। आगे भी आप के ज्ञान और अनुभव का लाभ छत्तीसगढ़ी को मिलता रहेगा, ऐसा विश्वास है। छत्तीसगढ़ी को ले कर आप के चिंतन और परामर्श के लिए हम सदैव आभारी रहेंगे।''

''**सितंबर 2000.** आप की लेखनी अबाध गति से प्रवाहित होती रहे और

हमें छोटी-से-छोटी त्रुटि के लिए भी सावधान करती रहे, यही शुभकामना है... आप-जैसे विद्वज्जनों का सद्भाव ही मेरा संबल है।''

''**दिसंबर 2000.** छत्तीसगढ़ी की क्षमताओं को उजागर करने के लिए आप ने अपने शिष्यों के साथ जो भगीरथ प्रयास किया है, उस के लिए हम सदैव ऋणी रहेंगे। छत्तीसगढ़ी को एक पाणिनि की नितांत आवश्यकता है, इस की पूर्ति आप ही कर सकते हैं। ऐसा मेरा विश्वास है। छत्तीसगढ़ी सक्षम भाषा के रूप में विकसित हो, उसे सही दिशा मिले, यह हम लोगों का सपना है, हमारी दृष्टि आप पर टिकी है।''

''**फ़रवरी 2001.** आप के लेख को मैं ने उसी दिन सहेज कर रख लिया था। आप से मिलना भी चाहता था, किंतु अस्वस्थता के कारण नहीं आ सका। आप ने इस पत्र में मेरे पिछले पत्र का उल्लेख किया है। वस्तुत: मैंने तो हनुमान जी को उन में बल और पराक्रम का स्मरण कराया था। मैं ने पिछले पत्र में आप से जो अपेक्षा की थी, वह कितनी सही थी, इस लेख से आप ने सिद्ध कर दिखाया। आप के सिवाय हम अपेक्षा कर भी किस से सकते थे? देश के प्रख्यात भाषावैज्ञानिक होने के नाते आप जिन सिद्धांतों का प्रतिपादन करेंगे, मान्यता तो उन्हें ही मिलेगी।''

''आप के तरकश में जितने भी तर्क थे, उन का इस्तेमाल आप ने ब्रह्मास्त्र की तरह किया है। इस के लिए हम छत्तीसगढ़ी-भाषी आप के प्रति आभारी हैं और रहेंगे। छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के साथ ही छत्तीसगढ़ी भाषा की विकास-यात्रा का नया युग आरंभ हो रहा है। अब आगे भी मार्ग-दर्शन आप ही को करना है। 'दैनिक भास्कर' में दो खंडों में प्रकाशित आप के इस दीर्घ लेख '**छत्तीसगढ़ी को शासकीय मान्यता दिलाने के आधार**' और '**स्थापित हो चुका है छत्तीसगढ़ी का मानक रूप**' से हम छत्तीसगढ़ी-भाषियों का मनोबल बढ़ा है।''

''**अप्रैल 2001.** दिनांक 30 मार्च 2001 को विधानसभा में छत्तीसगढ़ी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए सर्वसम्मति से संकल्प पारित हो गया। आप ने उसी दिन 'दैनिक भास्कर' में उन लोगों की अच्छी खबर ली है, जिन के पेट में छत्तीसगढ़ी की उन्नति की बात सुनते ही दर्द होने लगता है। महापंडित राहुल

सांकृत्यायन ने लिखा था - ''आंचलिक भाषाओं के साथ सौतेला व्यवहार अनुचित है। उन्हें विकास का पूरा अवसर प्राप्त होना चाहिए।'' छत्तीसगढ़ी-विरोधियों के अलावा सब जानते हैं कि छत्तीसगढ़ी राष्ट्रभाषा के विरुद्ध कभी नहीं हो सकती।

''मुझे प्रसन्नता है कि **आप के लेख ने अनुकूल प्रभाव डाला।**''

''**अक्टूबर** 2001. 'भास्कर' में छत्तीसगढ़ी पर आप का लेख पढ़ा। मन प्रफुल्लित हो गया।... ऐसा गंभीर चिंतनपूर्ण कथन आप-जैसा मौलिक चिंतक और **उच्च कोटि का** भाषावैज्ञानिक ही इतने सहज ढंग से व्यक्त कर सकता है।

''**इस** लेख में जो भी तर्क आप ने दिए हैं, वे अकाट्य हैं। छत्तीसगढ़ विधानसभा ने जो प्रस्ताव केंद्र को प्रेषित किया है, उसे बाहर से बुद्धिजीवियों का समर्थन मिलना चाहिए। उन की ओर से एक ज्ञापन महामहिम राष्ट्रपति तथा माननीय प्रधानमंत्री को भेजा जाना चाहिए।

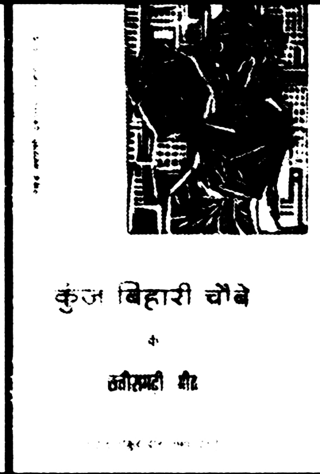
''लेख के लिए आप को कोटिशः धन्यवाद।''

अंत में मैं प्रणति-भाव से स्वीकार करता हूँ कि मैं ने उन के इन पत्रों के कारण कई ऊँची उड़ानें भरी हैं।.... लेकिन अब मैं उन के एक शब्द के लिए हमेशा तरसता रहूँगा।

मेरे हिसाब से उन की आत्मा को पूर्ण शांति तभी मिलेगी जब उन के मुझे लिखे गए पिछले कई पत्रों की तरह अंतिम पत्र में भी निहित उन की अधूरी चाह पूरी होगी - ***छत्तीसगढ़ी को संवैधानिक मान्यता।***

● *पूर्व-अध्यक्ष, भाषाविज्ञान-अध्ययनशाला,*
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

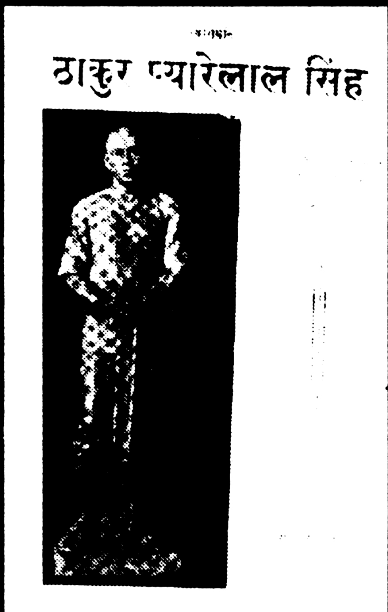




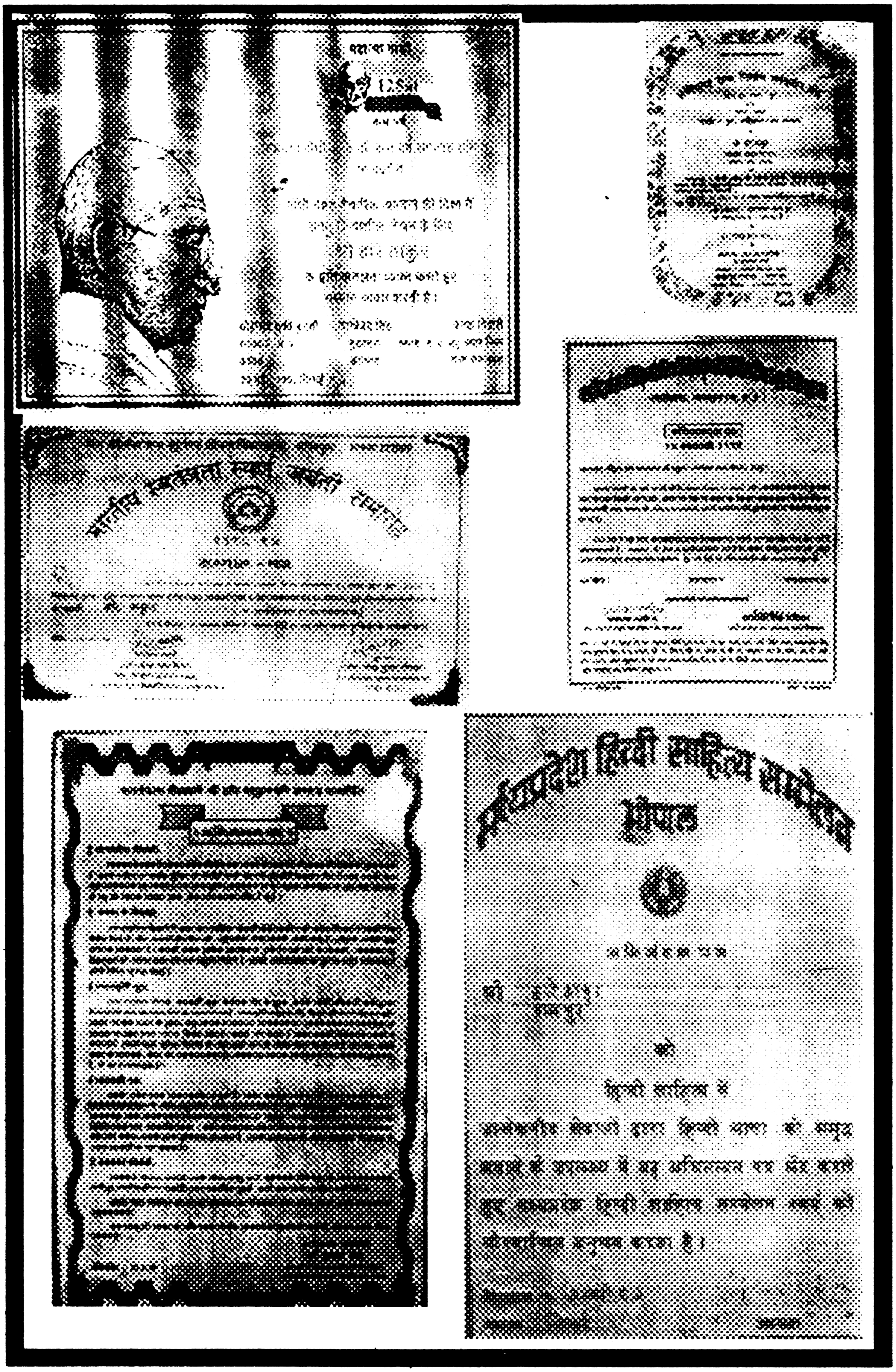


क्रांतिपुरुष श्री हरि ठाकुर के रचना-संसार से कुछ मोती : कुछ सीप









राज्य की अवधारणा, पाणिनी और छत्तीसगढ़

मध्यप्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य है, किन्तु बैडौल और असंतुलित, पाणिनी ने राज्य के जो वैज्ञानिक आधार बतलाए हैं, मध्यप्रदेश का निर्माण उसके ठीक विपरीत हुआ है। पाणिनी के अनुसार राज्यों का निर्माण निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर होना चाहिए -

1. राज्य (पाणिनी ने राज्य के लिए जनपद शब्द का प्रयोग किया है) भौगोलिक इकाई मात्र नहीं हैं। उनका सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक स्वरूप अधिक महत्वपूर्ण है।

2. राज्यों के नाम वही होते हैं, जिस नाम से उस राज्य के निवासी संबोधित किए जाते हैं। प्रत्येक निवासी का एक अभियान उसके राज्य के नाम के अनुसार होता है, जैसे अंगराज्य का निवासी आंगक, मिथला का निवासी मैथिल, कोसल का निवासी कौसल्य कहलाता था।

3. राज्य के निवासी एक ही बोली-भाषा बोलते हैं।

पाणिनी ने जो आधारभूत तत्व बतलाए हैं, उनकी व्याख्या निम्ननुसार की जा सकती है -

राज्य की अपनी भोगोलिक सीमाएँ होती हैं। भोगोलिक बनावट प्रकृति की बनावट के **अनुसार होती है।**डॉ. लक्ष्मीशंकरनिगम के अनुसार- किसी क्षेत्र के निवासियो की **प्रवृत्तियाँ , भौति**क और बौद्धिक विशिष्टताएँ बहुत अधिक सीमा तक आंचलिक **परिवेश में निर्मित** होती हैं। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास के **अध्ययन में उस क्षेत्र** का भौगोलिक इतिहास पीठिका का का कार्य करता है।

भौगोलिक इकाई के रूप में छत्तीसगढ़ वैदिक काल से एक अलग राज्य के

रूप में विकसित होता रहा है। यहाँ की जलवायु तथा भूमि की बनावट तथा उसकी गुणवत्ता धान की उपज के अनुकूल है। छत्तीसगढ़ में नदी-नालों का जाल बिछा हुआ है। क्षेत्र की प्राकृतिक बनावट, जलवायु तथा उपज का प्रभाव यहाँ के निवासियों के खान-पान , रहन-सहन तथा रीति-रिवाज पर पड़ता है। यही कारण है किं एक ही प्रदेश में रहते हुए भी छत्तीसगढ़ और अन्य अंचलों के निवासियों के रहन-सहन, खान-पान और रीति-रिवाजों में जमीन-आसमान का अंतर है।

भौगोलिक इकाई का अर्थ है क्षेत्र विशेष की प्राकृतिक स्थितियों की एकरूपता उदाहरण के लिए मध्य भारत और छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक अवस्थाओं में कोई समानता नहीं है। अत इन दोनों क्षेत्रों के निवासियों की प्रकृतियों, भौतिक तथा बौद्धिक विकास के ढंग अलग-अलग प्रकार के हैं।

पाणिनी के अनुसार-राज्यों के नाम वही होते थे, जिस नाम से वहाँ के निवासी संबोधित किए जाते हैं। छत्तीसगढ़ के निवासी छत्तीसगढ़ी नाम से संबोधित किए जाते हैं। रीवां तथा मध्य भारत के लोगों को छत्तीसगढ़िया नाम से नहीं संबोधित किया जा सकता।

उसी प्रकार छत्तीसगढ़ के लोगों को मालवी, बुन्देलखंड़ी या बघेलखंडी नाम से संबोधित नहीं किया जा सकता। अलग-अलग राज्यों की यह पहचान है, जो उन्हें उनके इतिहास ने दिया है। प्राकृतिक विशिष्टताएँ किसी क्षेत्र के इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही बात चार्ल्स जोपेन ने लिखी है-

The physical features of a land are responsible for much in the making of its earlier history .

छत्तीसगढ़ को मध्यप्रदेश में मिला देने से उसके प्रारम्भिक इतिहास और उसकी भौगोलिक स्थिति को समझने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। वाल्मीकि रामायण,महाभारत, पुराण आदि प्राचीन ग्रंथों में छत्तीसगढ़ को कोसल कहा गया है। बाद में इसे ही महाकोसलऔर दक्षिण कोसल कहा गया है। आज यह क्षेत्र मध्यप्रदेश में है। प्राचीन ग्रंथों में मध्यप्रदेश नाम से किसी राज्य का उल्लेख नहीं

मिलता है। इतिहास ने छत्तीसगढ़ को उसकी पहचान के लिए जो भौगोलिक और प्राकृतिक सीमाएँ प्रदान की हैं, उसे मध्यप्रदेश नाम देने से उसकी प्राचीन पहचान ही समाप्त हो जाती है।जब किसी उपनिवेश का निर्माण होता है, तब सबसे पहले उसके इतिहासबोध को कुंठित किया जाता है। यह इतिहास बोध ही किसी क्षेत्र के निवासियों को गौरव और स्वाभिमान प्रदान करता है। ब्रिटिश शासनकाल में आजादी के आन्दोलन के दरम्यान भारतेन्दु हरिशचन्द्र से लेकर पं. लोचनप्रसाद पाण्ड़ेय ने साहित्य का क्षेत्र त्यागकर इतिहास के क्षेत्र में जो शोध कार्य किया, उसके पीछे देशवासियों में इतिहास बोध जागृत करने के प्रयास किए गए , उदाहरण के लिए मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती हो, पं.लोचन प्रसाद पाण्ड़ेय की मेवाड़ गाथा, सुभद्रा कुमारी चौहान की झाँसी की रानी अथवा जयशंकर प्रसाद के नाटक।

इतिहास को उसके भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में ही व्याख्यायित किया जा सकता है। इतिहास को उसके भौगोलिक परिवेश से अलग नहीं किया जा सकती। छत्तीसगढ़ को मध्यप्रदेश में मिलाकर इतिहास के साथ अन्याय किया गया है। उसके साथ यही अन्याय ब्रिटिश शासन ने उसे सी. पी. एण्ड बरार प्रान्त में मिलाकर किया था। अंग्रेज विदेशी थे और उनके शासन काल में प्रजातंत्रीय प्रणाली का अभाव था। किन्तु आजादी के पश्चात छत्तीसगढ़ के साथ वही अन्याय दुहरायी जाएगी इसकी कल्पना नहीं थी।

आज मध्यप्रदेश का प्रत्येक अंचल अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए चिंतित है। छत्तीसगढ़ राज्य की माँग को लेकर जो लंबा आंदोलन चला, उसने मध्यप्रदेश में छोटे राज्य के लिऐ मार्ग प्रशस्त किया है। छत्तीसगढ़ राज्य की माँग के साथ स्वर में स्वर मिलाकर बुन्देलखण्ड़ , बघेलखण्ड़ , मध्य प्रदेश और सतपुड़ांचल की माँग मुखर होने लगी है। वर्षो साथ-साथ रहने के पश्चात भी मध्यभारत का निवासी जब छत्तीसगढ़ आता है तब अपने को परदेशी महसूस करता है। इसी प्रकार जब छत्तीसगढ़ निवासी अन्य अंचलों में जाता है तो वहाँ वह अपने को अजनबी पाता है। कहीं की ईट, कहीं का रोड़ा लेकर भानुमती ने जो कुनबा जोड़ा था, उससे कोई महल तो बना नहीं , मीना बाजार जरूर बन गया है। बड़े राज्यों का मोह भंग होना था, सो हो रहा है।

पाणिनि के अनुसार एक राज्य के निवासी एक ही प्रकार की बोली भाषा बोलते हैं। किसी भी राज्य की यह सबसे प्रामाणिक पहचान है। बंगाल की पहचान बंगाली है, गुजरात की पहचान गुजराती है, पंजाब की पहचान पंजाबी है , हरियाणा की पहचान हरियाणवी है , महाराष्ट्र की पहचान मराठी है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ की पहचान उसकी भाषा छत्तीसगढ़ी है, बघेलखंड की बघेली , बुन्देलखण्ड की बुन्देली और मध्यभारत की मालवी। इस परिभाषा के अनुसार मध्यप्रदेश को एक राज्य नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक अंचल की अपनी-अपनी भाषा है। उसे किसी भी अर्थ में एक भाषी राज्य नहीं कहा जा सकता। जहाँ तक हिन्दी का प्रश्न है,वह राष्ट्रभाषा है, वह तो सम्पूर्ण राष्ट्र में बोली जाने वाली भाषा है।

किसी क्षेत्र की भाषा ही उसकी लोक संस्कृति का संवहन करती है। एक अंचल में संस्कृति दूसरे अंचल की भाषा में व्यक्त नहीं होती है। प्रत्येक अंचल को अपनी लोक-संस्कृति और लोक परम्परा होती है। इसके कारण भी उस अंचल की अपनी पहचान बनती है। इसीलिए उस दुरुह बड़े मध्यप्रदेश में हर अंचल को उपेक्षित और अलग पाता है।

राज्य और साम्राज्य में अन्तर होता है। साम्राज्य में भौगोलिक सुसंगति या एकरूपता जरूरी नहीं होती। जबकि राज्य में यह जरूरी है। ब्रिटेन का साम्राज्य भारत, बर्मा , श्रीलंका , दक्षिण पूर्व द्वीपों तक विस्तृत था। अलग -अलग भौगोलिक इकाई होने के बावजूद वे सब एक साम्राज्य के अंग थे। इसी तर्ज पर मध्यप्रदेश का निर्माण हुआ है। इसे मिनी साम्राज्य की संज्ञा दी जा सकती है। अलग-अलग भौगोलिक इकाई वाले राज्यों को एक ही कोठे में ओलिया दिया गया है। म.प्र. में अलग-अलग भौगोलिक इकाई वाले अंचल हैं। उनकी अपनी-अपनी भाषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा अलग-अलग सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराएँ है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भी इन सबको एक ही राज्य नहीं माना जा सकता है। इन अंचलों में से किसी की भी मातृभाषा हिन्दी नहीं है। मातृभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर है। राष्ट्रभाषा हिन्दी का व्याकरण आंचलिक भाषाओं पर लागू नहीं होता। फिर भी मालवी , बुन्देली, छत्तीसगढ़ी को हिन्दी मान लिया गया।

मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के भेद को ध्यान में रखा ही नहीं गया। इसके विपरीत यह दर्शाने का षड़यन्त्र रचा गया कि छत्तीसगढ़ के लोग छत्तीसगढ़ नहीं, हिन्दी बोलते हैं। उदाहरण के लिए सन् 1961की जनगणना के अनुसार बिलासपुर जिले में हिन्दी जिनकी मातृभाषा है- बोलने वालों की संख्या 19,38,953थी किन्तु छत्तीसगढ़ी जिनकी मातृभाषा बोलने वालों की संख्या मात्र 9139 थी। बिलासपुर जिले के शहरों में केवल 233लोग छत्तीसगढ़ी बोलते थे, जबकि इसी जनगणना के अनुसार बिलासपुर जिले में उर्दू बोलने वालों की संख्या 10,000 तथा सिन्धी बोलने वालों की संख्या 9,521 बतलायी गई है। मध्यप्रदेश को हिन्दी प्रदेश सिद्ध करने के लिए बिलासपुर जिले के 95प्रतिशत लोगों की मातृभाषा हिन्दी दर्शायी गई है। इस जिले में जिनकी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी है। उनकी संख्या मात्र 0.5 प्रतिशत दर्शाई गई है। ऐसे ही सफेद झूठ की नींव पर मध्यप्रदेश राज्य की नींव रखी गई है।

इसी प्रकार रायपुर जिले में सन् 1951की जनगणना के अनुसार हिन्दी मातृभाषियों की संख्या 9,33, 260 दर्शायी गई है जबकि छत्तीसगढ़ी मातृभाषियों की संख्या 4,32,717 दर्शायी गई है। अर्थात जिनकी मातृभाषा हिन्दी थी, रायपुर जिले मे उनकी संख्या 5694प्रतिशत थी, जबकि छत्तीसगढ़ी मातृभाषियों को अल्पसंख्यक सिद्ध करने का यह राजनैतिक षड्यंत्र आजादी के बाद से ही आरम्भ हो गया था। जो काम अंग्रेजों ने नहीं किया, वह करिश्मा देशी शासकों ने कर दिखाया। भाषा ही किसी क्षेत्र की पहचान होती है। उसका दर्जा कम कर दी , लोगों में हीनभावना खुद जन्म ले लेगी। गाँधी जी इस स्थिति से परिचित थे। इसलिए महात्मा गाँधी ने कहा था- मेरी मातृभाषा में चाहे जितनी भी खामियाँ क्यों न हों, मैं उससे उसी तरह चिपटा रहूँगा जिस तरह अपनी माँ से।

●

शिवरीनारायण जगन्नाथजी का मूल स्थान है

चौदहीं शताब्दी के प्रारंभ में सरलादास उड़िया के प्रसिद्ध महाकवि ने लिखा "भगवान जगन्नाथ स्वामी को शवरीनारायण से पुरी लाकर प्रतिष्ठित किया गया था।" तात्पर्य है कि भगवान जगन्नाथ स्वामी का मूल स्थान पूरी नहीं, शिवरीनारायण है। भगवान जगन्नाथ का एक नाम शिवरीनारायण भी है। यह इसलिए है कि लोग उनके मूल स्थान को न भूले।

शिवरीनारायण और महानदी

शिवरीनारायण, बिलासपुर, जिले की जांजगीर तहसील में महानदी और विश्वनाथ नदियों के पवित्र संगम पर स्थित है। सन् 1885 तक शिवरीनारायण में तहसील का मुख्यालय था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के परम मित्र ठाकुर जगमोहन सिंह उन दिनों शिवरीनारायण में तहसीलदार थे। "श्यामा स्वप्न" आदि प्रसिद्ध ग्रथों के सृजन की प्रेरणा उन्हें यहीं मिली थी। सन् 1885 में महानदी में भयंकर बाढ़ आई। और तहसील कार्यालय सहित शवरीनारायण की आधी बस्ती बह गई। कार्यालय जांजगीर स्थानांतरित कर दिया गया।

महानदी छत्तीसगढ़ और उड़ीसा की प्राण-रेखा हैं। रामायण, महाभारत और पुराणों में महानदी की महिमा का बखान है। कपिल संहिता में महानदी को गंगा के समान पवित्र और सर्वपापबिनाशिनी कहा गया है। शवरीनारायण इसी पवित्र नदी के तट पर एक प्राचीन तीर्थ स्थान के रूप में सुप्रतिष्ठित है। कहा जाता है कि पुराण प्रसिद्ध रतनपुर के शासक मयूरध्वज के पुत्र ताम्रध्वज ने शवरीनारायण में यात्रा (मेला) भरवाने का कार्य आरंभ किया था। तब से आज तक यह स्थान एक पवित्र तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है।

शबर और जगन्नाथ जी

शबर एक अति प्राचीन जाति है। रामायण महाभारत और पुराणों में इस जाति का उल्लेख मिलता है। भगवान श्री राम ने इसी जाति की भक्तिन शवरी के

जूठे बेर खाये थे अनुमान है शवरी इसी शवरीनारायण के किसी शबर राजा कह विदुषी कन्या थी। शवरी ने राम में नारायण के रूप की पहचान की।

डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र ने लिखा है - 'शबर (सबरा) लोग भारत के मूल निवासियों में से हैं। उनके मंत्रजाल की महिमा तो रामचरित्र मानस तक में पाई गई हैं। शवरीनारायण में भी एक ऐसा ही शबर या जो जगन्नाथ जी का भक्त था।'

श्री प्यारेलाल गुप्त ने बिलासपुर वैभव में लिखा है - 'जिस स्थान पर शबरी नारायण बसा है, वहाँ उस समय जंगल था। प्राचीन समय में वहाँ एक शबर रहता था। वहाँ जगन्नाथ की मूर्ति थी। वह शबर उस मूर्ति की नित्य नियम से पूजा करता था। एक दिन एक ब्राम्हण ने उस मूर्ति को देख लिया। वह उसे वहाँ से ले गया और जगन्नाथ पुरी में स्थापित कर दी।'

बिलासपुर गर्जेटियर में लिखा है - 'शबरी नारायण क्षेत्र में घना जंगल था, वहाँ शबर जाति के लोग निवास करते थे। वे भगवान जगन्नाथ की उपासना करते थे। बाद में एक ब्राम्हण ने जगन्नाथ जी की प्रतिमा शवरीनारायण से हटा कर पुरी में स्थापित कर दी। इसके बदले में शबरों की वरदान प्राप्त हुआ कि उनके नाम के साथ शबर नारायण हमेशा जुड़ा रहेगा।' उड़ीसा के महाकवि सरलादास के कथन की पुष्टि उपयुक्त उदाहरणाओं से भी होती है कि भगवान जगन्नाथ का मूल स्थान शवरीनारायण ही है।

वस्तुत: शबर लोग प्राचीन काल से ही तंत्र-विद्या में प्रवीण्य थे। भगवान जगन्नाथ उनके इष्ट देव के रूप में उपास्य थे। कविराज गोपीनाथ ने लिखा है। "शाबर आदि में क्लेच्छ भाषाओं में भी मंत्र-रहस्यों की व्याख्या होती थी।" अर्थात शबर तंत्र-मंत्र के रहस्यों के ज्ञाता थे। इस मंत्रयान ले ही वज्रयान की शाखा प्रस्फुटित हुई। वज्रयान तांत्रिक बौद्धों की प्रमुख शाखा है।

जगन्नाथ स्वामी और इन्द्र भूति

इतिहास के तर्कसम्मत विश्लेषण से यह तथ्य उजागर होता है कि शबरीनारायण से भगवान जगन्नाथ को पुरी ब्राम्हण नहीं ले गया। उन्हें शबरीनारायण

से हटाने वाले इन्द्रभूमि थे। इन्द्रभूमि वज्रयान के संस्थापक थे। डॉ. एन.के. साहू के अनुसार - "सम्भल (सम्बलपुर) के राजा इन्द्रभूमि जिन्होने कौसल के इतिहास के अणकार युग (आठवीं नौवीं शताब्दी) में राज्य किया था, बौद्ध धर्म के वज्रयान सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। इन्द्रभूति प्रद्यवज्र (सरोरूह वज्र) के शिष्य अनगवज्र के शिष्य थे। कविराज गोपीनाथ ने इन्द्रभूति को 'उड्डयन सिद्ध अवधूत' कहा है। सहज यान की प्रवर्तिका लक्ष्मीकरा इन्हीं इन्द्रभूति की बहन थी। इन्द्रभूति के पुत्र पद्मसंभव ने तिब्बत जाकर लामा सम्प्रदाय की स्थापना की थी।

इन्द्रभूमि ने अनेक ग्रंथ लिखे। 'ज्ञान सिद्धि' उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध तंत्र-ग्रंथ है। उन्होने अपने ग्रंथ 'ज्ञान सिद्धि' में भगवान जगन्नाथ की बार-बार वन्दना की है। इसके पहले जगन्नाथ जी को भगवान के रूप में मान्यता नहीं थी। इन्द्रभूति जगन्नाथ को भगवान बुद्ध के रूप में देखते थे। जगन्नाथ जी की प्रतिमा के सम्मुख बैठकर वे तंत्र-साधना करते थे। 'इवेज तंत्र साधना' और शाबर मंत्रों के समन्वय से इन्द्रभूति ने वज्रयान सम्प्रदाय की स्थापना की।

शाबर मंत्र साधना और वज्रयान तंत्र साधना की जन्मभूमि यह दक्षिण कोसल ही है। सन 1907 तक सम्बलपुर छत्तीसगढ़ में ही शामिल था। इन सबको मिलाकर यह क्षेत्र दक्षिण कोसल कहलाता था।

श्री जे.पी. सिंहदेव के अनुसार इन्द्रभूति शबरीनारायण से भगवान जगन्नाथ को सोनपुर के पास समलाई पहाड़ी स्थित गुफा में ले गए। उनके सम्मुख इन्द्रभूति तंत्र साधना करते थे। शबरों के इष्ट देव जगन्नाथ जी को भगवान के रूप में मान्यता दिलाने का यश इन्द्रभूति की ही है। आसाम के 'कालिका पुराणा' में लिखा है - तंत्र का उदय उड़ीसा में हुआ था। उसका आशय यही समलाई पहाड़ी स्थित गुफा से है। और भगवान जगन्नाथ उनके इष्ट देव थे।'

इन्द्रभूति के पश्चात् आठवीं शताब्दी में उनके पुत्र पद्मसंभव ने योग्यतापूर्वक इस तंत्र पीठ को संचालित किया। किन्तु वे भी अपने पिता के समान सिद्ध पुरूष थे। बाद में शांतरक्षित की अनुशंसा पर तिब्बत नरेश रवी सोंगल्दे बस्सन ने पद्मसंभव को

तिब्बत बुला लिया। इन्द्र भूति की बहन लक्ष्मी कंरा का विवाह जालेन्द्रनाथ से हो गया। भगवान जगन्नाथ की देख-भाल उचित ढंग से कोई करने वाला नहीं था। अत: इस तंत्र-सम्प्रदाय के लोग जगन्नाथ जी की पुरी ले गए।

पुरी की मंदिर और अनंत वर्मा चोड़गंग

पुरी में जगन्नाथ स्वामी की स्थापना के पश्चात् पुरी का महत्व बढ़ गया -। आज यह देश के सबसे बड़े तीर्थो में से एक है। ग्यारहवीं शताब्दी में अनंत वर्मा चोड़गाँव (लगभग 1976-1108 ई.) ने दक्षिण से आकर उड़ीसा पर विजय प्राप्त की और अपना साम्राज्य स्थापित किया। जगन्नाथ स्वामी को वर्तमान मंदिर का निर्माण उसी ने करवाया। शताब्दियाँ बीत जाने पर भी यह मंदिर अपनी कलात्मक सौष्ठव तथा वैभव के भी कारण हजारों देशी-विदेशी पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करता है। चूकि छत्तीसगढ़ भगवान जगन्नाथ स्वामी का मूल स्थान है, इसलिए इस क्षेत्र में जगन्नाथ स्वामी का रथोत्सव अपार श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाए जाने की परम्परा है।

●

छत्तीसगढ़ी-गीत

छत्तीसगढ़ के गंगा

दूध असन छलकत जावत हे, महानदी के धार ।
छत्तीसगढ़ के माटी ओखरे, सेती करे सिंगार ।।
लहर-लहर लहरावै खेती
चंवर डोलावै धान ।
कोदो, राहेर, तिवरा, बटुरा
मा भरथे मुस्कान ।।
हरियर हरियर जम्मो कोती, दिखथे सबो कछार ।
दूध असन छलकत जावत हे महानदी के धार ।।
छत्तीसगढ़ के गंगा मंइया
सब झन के महतारी ।
तोर अंचरा में राजिम-लोचन
तीरथ अब्बड़ भारी ।।
तोर दया जेखर उप्पर हे, निक ओखर संसार ।
दूध असन छलकत जावत हे महानदी के धार ।।
तोर चरन मा पाप चढ़ाके
पुत्र सकेले पायेन ।
तोर भरोसा जीयेन खायेन
इतरायेन मेंछरायेन ।।
ये महतारी के कोरा मा, सदा सरग दरबार ।
दूध असन छलकत जावत हे, महानदी के धार ।।

●

बेरा नव-निरमान के

बेरा नव निरमान के

जागौ बीर किसान के आगे बेरा नव-निर्मान के

तुहरे जगाये भाग जागही सिरतो हिन्दुस्थान के

(1)

धरौ कुदारी, रापा, टुकना

नागर थामव खाँध मा

नरवा-नदिया के पानी ला

छेंकव जुरमिल बांध मा

माँग संवारौ धरती माँ के, नाथौ फने तूफान के

जागौ बीर किसान कि आगे बेरा नव-निर्मान के

तुहरे जगाये भाग जागही सिरतो हिन्दुस्थान के

(2)

हरियर हरियर खेती लहरय

महकय बारी-फुलवारी

अपन गाँव के उन्नति बर तुम

काम करौ ओसरी-पारी

भेद-भाव कन्हिया टोरव, फोरौ मुड़ अज्ञान के

जागौ वीर किसान कि आगे बेरा नव-निर्मान के

तुहरे जगाये भाग जागही सिरतौ हिन्दुस्थान के

(3)

टोनही अस झूपत ये बिरबिट
रतिहा घलो पहा जाही
आही सुरुज सजे दुलहा अस
दिन के मुंह ला उजराही
सूरुज के आंखी में झूलत सपना नवा बिहान के
जागौ बीर किसान कि आगे बेरा नव-निर्मान के
तुहरे जगाये भाग जागही सिरतो हिन्दुस्थान के

(4)

श्रम के सुरुज जिहाँ निकरथे
उहाँ रात के काम नहीं
पौरुस उही कहाथे जेला
छिन भर घलो अराम नहीं
सुर उच्चारौ सदा जागरन, जीवन अउ कल्याण के
जागौ बीर किसान कि आगे बेरा नव-निर्मान के
तुहरे जगाये भाग जागही सिरतो हिन्दुस्थान के

(5)

आलस अउर गरीबी दूनो
हमर प्रगति बैरी आयं
हमरे बैरी हमरे घर में
खुसरे अउ हमला गुर्रायं
इन दूनों बैरी के मुंह मा मारौ थपरा तान के
जागौ बीर किसान कि आगे बेरा नव-निर्मान के
तुहरे जगाये भाग जागही सिरतो हिन्दुस्थान के

(6)

टारौ छुआ-नीक केअलहन
बारौ ऊंच-नीच के कचरा
लोभ अऊ स्वारथ के खातिर
झन छोड़व सतपथ के अंचरा
सफल ओखरे जिनगी जेहर चलथे डहर इमान के
जागौ बीर किसान कि आगे बेरा नव-निर्मान के
तुहंर जगाये भाग जागही सिरतो हिन्दुस्थान के

(7)

मन के जीते जीत हवय अउ
मन के -हारे हार हे
हिम्मत बाला मन बर संगी
सब दिन तीज तिहार हे
जाँगर वाला मन के बस में मंत्र हवय उत्थान के
जागौ बीर किसान कि आगे बेरा नव-निर्मान के
तुहरे जगाये भाग जागही सिरतो हिन्दुस्थान के

(8)

जेखर जाँगर-ओखर नाँगर
जेखर नाँगर-ओखरे भुंइया
अन उपजैया मन के बल में
चलत हवय सब दिन ये दुनिया
जय बोलो इन अनउपजइया भारत बीर किसान के
जागौ बीर किसान कि आगे बेरा नव-निर्मान के
तुहरे जगाये भाग जागही सिरतो हिन्दुस्थान के

जागौ जागौ भइया किसान

हमरो हाड़ा में पीरा हे
हमरो तो लहू जवान भइस
हम ज्यादा दुःख सहन काबर
हमरो बर नवा बिहान भइस
बन जाबो आगी, आंधी, तुफान।
जागौ जागौ भइया किसान ॥

दुनिया के सब धरती हमार
जोतै तेखरे सब खेत करौ
जेखर जांगर वोखरे हक हो
अइसन मिल के सब नेत करौ
कब ले दुख-दारिद हम उठान।
जागौ जागौ दुखिया किसान ॥

दू दू कौड़ी बर लुलुवाएन
पहिरेन चेंधरी, कोदो खाएन
सब ला आजादी मिलिस मगर
हम भूमिपुत्र मन का पाएन ?
लागा-बोड़ी, कुर्की, निलाम।
बन गेइन परबुधिया किसान।

कन्हिया कस के सब बढ़े चलौ
खुद भाग अपन तुम गढ़े चलौ
शोषण, अन्याय, गरीबी से
सब जुर-मिल के अब लड़े चलौ
जागौ छत्तीसगढ़ के जवान।
जागौ जागौ भइया किसान ॥

किरन मंत्र

बादलों ने हाथ मेरा
पकड़ कर मुझसे कहा
खोल अपने पंख
सागर पार तक आओ चलें।
मैं अपाहिज-सा पड़ा था
देवता के पाँव पर
भाग्य ने मुझको लगाया
साँस के हर दाँव पर
किरन मंत्रों से जगा कर
सूर्य ने मुझसे कहा
छोड़ यह चौखट
सुबह के द्वार तक आओ चलें।
प्रार्थना का स्वर लबालब
आँसुओं से भर गया
पत्थरों पर फूल का
सौरभ असर कुछ कर गया
हृदय की ज्वाला बुझा कर
आँसुओं ने तब कहा
छोड़ यह पनघट
मनुज के प्यार तक आओ चलें।

सूरज का रथ

कुंठित पड़ी दिशाएँ
खण्डित पड़ा गगन है।
तारों की खिड़कियों से
पत्थर बरस रहे हैं॥
सूरज का रथ विपथ हो
नभ में भटक रहा है।
टूटे हुए क्षितिज पर
दिन भर लटक रहा है॥
सूखा रहा है सावन
बादल बने हैं दुश्मन।
चंदा की रोशनी से
विषधर बरस रहे हैं॥
मेरी नहीं ये ऋतुएँ
मेरा नहीं यह उपवन।
हर फूल अजनबी है
निर्गंध है प्रभंजन॥
यह शीश नहीं मेरा
कंधे जो ढो रहे हैं।
ये अर्थ नहीं जिनको
अक्षर तरस रहे हैं॥

डरा-डरा घबराया सा दिन

लगता बहुत पराया-सा दिन
सूरज से ठुकराया-सा दिन
हारे हुए जुआड़ी जैसे
सब कुछ लुटा-लुटाया-सा दिन
अपनी ही करनी से लगता
शरमाया झुंझलाया-सा दिन
कहाँ न जाने रहा रात भर
कालिख मल कर आया-सा दिन
बादल ओढ़े पड़ा हुआ है
डरा-डरा घबराया-सा दिन
कल तक तो सब ठीक-ठाक था
आज मगर कुम्हलाया-सा दिन।

उपवन को ही ज्ञात नहीं

कब-कब कितने फूल झरे
यह उपवन को ही ज्ञात नहीं ।
कितने छले गए
मृगजल को इसकी खबर नहीं
कितने पथ टिके
जंगल को इसकी खबर नहीं
तन पर कितने साँप घिरे
यह चन्दन का ही ज्ञात नहीं ।
कितने सपने टूटे
उसकी ही पांखों से पूछो
बिछड़े कितने लोग
चिता की राखों सें पूछो
कितनी गिरी बिजलियाँ
यह सावन को ही ज्ञात नहीं ।
कब कब कितने फूल झरे
यह उपवन को ही ज्ञात नहीं ।।

उस दिन सचमुच बड़े भोर से

उस दिन सचमुच बड़े भोर से
घटा घिरी थी जोर-शोर से।
नभ पर था अंधियारा छाया।
सूरज निकल नहीं था पाया॥
बिजली चमकी क्षितिज कोर से।
उस दिन सचमुच बड़े भोर से॥
फूट पड़ी थी जल की धारा।
नदियाँ उमड़ी तोड़ किनारा॥
नाले बहते गली खोर से।
उस दिन सचमुच बड़े भोर से॥
बादल भारी डोल रहे थे।
ढोल सरीखे बोल रहे थे॥
हवा चली थी बर्फ-छोर से।
उस दिन सचमुच बड़े-भोर से॥
वृक्ष बराबर झूम रहे थे।
झुक कर धरती चूम रहे थे॥
छत टपकी थी पोर-पोर से।
उस दिन सचमुच बड़े भोर से॥

●

खिलते खिलते रह गया

खिलते खिलते रह गया
आज फिर नील कमल
खिलते, खिलते रह गया
आज फिर नील कमल।
होते होते रह गया
आज फिर मन निर्मल ।।
आते-आते खो गई
किरण की नाव कहीं।
बसते-बसते रह गया
स्वप्न का गाँव कहीं ।।
पूजा के पहले ही
दीपक बुझ गया और
सब बिखर गए
कुंकुम, गुलाल, हलदी, चाँवल ।।
खिलते खिलते ....
पथ ही अमित्र हो गया
लक्ष्य प्रतिकूल न था।
अँजुरियों में थी तृषा
कि उनमें फूल न था ।।
आरती सजी पर
शब्द-पात्र सब रिक्त पड़े।
रह गया शेष फिर वही
व्यथा का विन्ध्याचल ।।
खिलते खिलते ....

वहाँ प्रकाशित हो न सका मैं

फूला कितनी बार डाल पर
किन्तु सुवासित हो न सका मैं।
ऐसा भी क्या सतत अपरिचय
अपयश की निधि, वह भी अक्षय।
मैं जिस नभ के लिए उगा था
वहाँ प्रकाशित हो न सका मैं।
फूला कितनी बार डाल पर
किन्तु, सुवासित हो न सका मैं।।
सम्मुख है रेतीला सागर
हर अभाव का दोष उजागर
अपने ही मंगल उत्सव में
खुद सम्मानित हो न सका मैं।
फूला कितनी बार डाल पर
किन्तु, सुवासित हो न सका मैं।।

●

श्रद्धा के पुष्प

हरि ठाकुर : एक जन-आंदोलन

■ **महामहिम श्री दिनेश नंदन सहाय** (राज्यपाल महोदय छत्तीसगढ़ शासन)

हरि ठाकुर का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा

राज्यपाल महामहिम दिनेश नंदन सहाय ने छतीसगढ़ के जाने-माने साहित्यकार और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हरि ठाकुर के निधन पर गहन दु:ख व्यक्त करते हुए अपनी शोक संवेदना में कहा कि स्व. श्री ठाकुर के निधन से साहित्य के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है ।

■ **श्री अजीत जोगी** (मुख्यमंत्री)

मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि एक युग का अंत हो गया है। छत्तीसगढ़ ने एक सपूत को खो दिया। कवि, साहित्यकार, इतिहासकार के रूप में उन्होंने छत्तीसगढ़ को उसकी अस्मिता से अवगत कराया था। श्री जोगी ने स्मरण करते हुए कहा कि श्री ठाकुर हमेशा छत्तीसगढ़ राज्य के आंदोलन के साथ रहे।

■ **श्री विद्याचरण शुक्ल जी** (पूर्व केन्द्रीय मंत्री)

कांग्रेस के वरिष्ठ एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने प्रसिद्ध साहित्यकार एवं समाजसेवी श्री हरि ठाकुर के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है । श्री शुक्ल ने अपने संवेदना संदेश में कहा कि श्री हरि ठाकुर मेरे बचपन के मित्रों में से थे । हमारे परिवार एवं उनके परिवार के बीच घरोबा संबंध रहा है, उनके आकस्मिक निधन पर मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनके परिवारजनों को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करें ।

■ **श्री रामपुकार सिंह (जनसम्पर्क एवं खनिज साधन मंत्री)**

जनसम्पर्क एवं खनिज साधन मंत्री रामपुकार सिंह एवं राज्य मंत्री देवेन्द्र बहादुर, उद्योग एवं सार्वजनिक उपक्रम राज्यमंत्री विधान मिश्रा ने अपने शोक संदेश में कहा है कि स्वर्गीय श्री ठाकुर के रचनात्मक एवं सृजनशील कार्यो को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

■ **श्री रविन्द्र चौबे (लोक निर्माण आवास एवं नगरीय प्रशासन मंत्री)**

लोक निर्माण आवास एवं नगरीय प्रशासन मंत्री रविन्द्र चौबे ने अपने शोक संदेश में कहा कि वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्रम सेनानी श्री ठाकुर ने पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने अपने रचनात्मक लेखन के जरिये समाज को नई दिशा दी।

■ **श्री रामानुजलाल यादव जी (अध्यक्ष छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी)**

छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रामानुजलाल यादव ने श्री हरि ठाकुर के निधन को अपूरणीय क्षति निरूपित करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि स्व. हरि ठाकुर ने साहित्य साधना करते हुए अपने लेख एवं कविताओं से पूरे छत्तीसगढ़ के जनमानस को प्रभावित किया। वे सेनानी परिवार से थे। उनके आकस्मिक निधन से सारा कांग्रेस परिवार शोकाकुल है।

■ कांँग्रेस भवन में श्रद्धांजलि सभा

आज प्रात: प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में भी शोकसभा आयोजित की गई जिसमें प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष पवन दीवान, महामंत्री एवं प्रमुख प्रवक्ता राजेन्द्र तिवारी, महामंत्री डॉ. शिवकुमार डहरिया, अब्दुल हमीद हयात, महामंत्री एवं विधायक डॉ. रामलाल भारद्वाज, प्रवक्ता एवं सचिव अमीर अली फरिश्ता, प्रवक्ता एवं विचार विभाग के प्रदेश संयोजक शैलेश नितिन त्रिवेदी, सचिव नरेन्द्र राय, मिर्जा दाउद बेग, गोवर्धन नेताम, अल्पसंख्यक विभाग के

सह-अध्यक्ष पप्पू फरिश्ता, एन.एस.यू.आई. के प्रदेशाध्यक्ष एजाज ढेबर, किरणमयी नायक, सुधा कसार, रामधनी वर्मा, सुब्रत डे, महेन्द्र छाबड़ा, सुर्यकांत तिवारी ,मधु नायक, कुबेर यदु सदस्य पिछड़ा वर्ग सलाहकार मंडल, द्वारका प्रसाद साहू, जिला पंचायत सदस्य, अनिल साहू, मणिहार साहू, सुशील शुक्ला, संजीव अग्रवाल, आनंद गिलहरे, चंदूलाल नारवानी, सुखीराम बंजारे आदि उपस्थित थे ।

■ **छत्तीसगढ़ हिंदी साहित्य मण्डल** के अध्यक्ष देवीसिंह चौहान ने अपने संदेश में कहा है कि स्व. ठाकुर लम्बे समय तक अपने कार्यो से याद किये जाते रहेंगे ।

■ **पं. सुंदरलाल शर्मा स्मृति शिक्षण संमिति** ने आज लोकसभा आयोजित कर स्व. ठाकुर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की, अध्यक्ष सुभाष शर्मा, प्राचार्य अखिलेश शर्मा, संयोजिका रमा शर्मा ने मौन रखकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी ।

■ **छत्तीसगढ़ बज्मे शेरो सुखन** की एक आपात बैठक नूरानी चौक स्थित गुलजारे हाशिम में हुई । संस्था के समस्त सदस्यों ने दो मिनट का मौन धारण कर हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार एवं समाज सचेतक हरि ठाकुर को श्रद्धांजलि अर्पित की । इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष मो. हाशिम खान (एडव्होकेट) ने कहा कि श्री ठाकुर से समाज ने एक सामाजिक चिंतक, प्रखर वक्ता एवं हिन्दी साहित्यकार को खो दिया जो हम सब के लिए अपूरणीय क्षति है ।

■ **पूर्व साँसद श्री चन्द्रशेखर साहू**

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं अंचल के वरिष्ठ साहित्यकार हरि ठाकुर ने निधन पर पूर्व साँसद चन्द्रशेखर साहू ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन के लिए अग्रणी सूत्रधार रहे स्व. ठाकुर का निधन इस अंचल की निजी क्षति है । साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा ।

■ **समता सहकारी गृह निर्माण समिति** के पूर्व अध्यक्ष वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं साहित्यकार हरि ठाकुर के निधन पर संस्था कार्यालय ने अवकाश घोषित किया। संस्था अध्यक्ष जयनारायण शर्मा ने स्व. ठाकुर के निधन को छत्तीसगढ़ की अपूरणीय क्षति बताया।

■ शा. दू. ब. स्नातकोत्तर महिला म. वि. के हिन्दी विभाग के हिन्दी व छत्तीसगढ़ी के मूर्धन्य साहित्यकार हरि ठाकुर के दुःखद निधन पर शोकसभा आयोजित की। विधानसभा डॉ. सत्यभामा आडिल ने कहा कि हमने छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य के सजग प्रहरी को खो दिया।

■ रायपुर होमियोपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय संचालन समिति के अध्यक्ष जिवेन्द्रनाथ ठाकुर सहित उपाध्यक्ष डॉ. एस. एस. मेहरोत्रा, डॉ. सुखनंदन सोनकर, सचिव आर. एस. बिस्सा, संयुक्त सचिव एस. के. व्यास, कार्यकारिणी सदस्यों आर.डी.एस. कश्यप, व्ही. एस. वर्मा, एस.पी. सक्सेना, डॉ. विश्वामित्र नेताम, एस.के. ठिकरिहा, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए. एस. डेनियल, प्रशासनिक अधिकारी ए.के. पाण्डेय आदि ने सेनानी हरि ठाकुर ने निधन पर गहरी संवेदना प्रकट की है। उन्होने स्वर्गीय ठाकुर को छत्तीसगढ़ राज्य निर्माताओं में से अग्रगण्य बताते हुए उसे नवोदित राज्य के लिए अपूर्णीय क्षति कहा है।

■ सिविल लाईन वार्ड के पार्षद कचरू साहू नें शोक संदेश में कहा कि श्री ठाकुर मिलनसार एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य के प्रणेता थे। वे सच्चे गांधीवादी एवं स्वतंत्रता सेनानी रहे।

■ अग्रगामी नाट्य मंच के जलील रिजवी, अवंतिका के मिर्जा मसूद, कौतुक के डॉ. कुंजबिहारी शर्मा सहित सत्यम बाल संस्थान की संचालिका श्रीमती अनिता शाह ने भी हरि ठाकुर के असामयिक निधन पर अपनी प्रतिक्रियाओं में कहा कि उनका अप्रकाशित साहित्य इकट्ठा कर उसे प्रकाशित करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

■ साहित्य समन्वय समिति ने अपनी एक असाधारण बैठक में छत्तीसगढ़

के शलाका पुरूष एवं अनन्यतम साहित्यकार हरि ठाकुर के दुःख निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि हरि ठाकुर का बहुआयामी व्यक्तित्व छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक अस्मिता का पर्याय था ।

■ साहित्कारों को भारी क्षति

छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य मंडल के अध्यक्ष प्रो. देवीसिंह चौहान, अमरनाथ त्यागी, छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. देवीप्रसाद वर्मा, छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के महासचिव गिरीश पंकज, सचिव डॉ. सुधीर शर्मा, छत्तीसगढ़ शोध संस्थान डॉ. रामकुमार बेहार, छत्तीसगढ़ी लोकाक्षर के संपादक नंदकिशोर तिवारी, भिलाई के श्री परदेशीराम वर्मा, बिलासपुर के श्री श्यामलाल चतुर्वेदी, डॉ. रामनारायण शुक्ल, छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान के डॉ. मन्नूलाल यदु, विश्वेन्द्र ठाकुर, अम्बर शुक्ला आदि ने हरि ठाकुर के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की है ।

■ *डॉ. रामनारायण शुक्ल* (अध्यक्ष - भारतेन्दु साहित्य समिति)

छत्तीसगढ़ के महान साहित्यकार, कवि, इतिहासकार, समाजसेवी, अनेक ग्रंथों के सृजनकर्ता, अनेक पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के संपादक हरि ठाकुर के आकस्मिक निधन से छत्तीसगढ़ के साहित्यकार, पत्रकार, बुद्धिजीवी, छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के लिए संघर्ष करने वाले कार्यकर्ताओं तथा सारे छत्तीसगढ़ में शोक छा गया है। छत्तीसगढ़ के नगर-नगर में साहित्यिक तथा सामाजिक संस्थाओं द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि दी जा रही है। वे बड़े बाप के बड़े बेटे थे। वे छत्तीसगढ़ के महान सपूत थे। यदि यह कहा जाय कि वे अपने पिता स्व. प्यारेलाल ठाकुर से भी कुछ बातों में महान थे, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हरि ठाकुर जी ने छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक महापुरुषों - छत्तीसगढ़ के इतिहास पर जो शोध-परक लेख लिखा वह छत्तीसगढ़ के लिए अमूल्य निधि है। उन्होने छत्तीसगढ़ में प्रकाशित होने वाली अनेक ग्रंथों की प्रस्तावना व भूमिका लिखी। साहित्यकारों की पुस्तकों पर समीक्षा लिखी और उन्हें साहित्यिक मंच पर स्थापित किया । उनके स्वर्गारोहण से छत्तीसगढ़ की अपूरणीय क्षति हुई है। छत्तीसगढ़ के इस महान साहित्यकार, हिन्दी और छत्तीसगढ़ी के कवि,

लेखक को जिसने छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण में प्रमुख निभाई उसे छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा जो पुरस्कार वितरण किया गया उसमें छत्तीसगढ़ी के कवि सुन्दरलाल शर्मा पुरस्कार हरि ठाकुर को न दिया जाना बड़े दुर्भाग्य की बात है और छत्तीसगढ़ राज्य के लिए कलंक है।

बिलासपुर की 67 वर्ष प्राचीन साहित्यिक संस्था भारतेन्दु साहित्य समिति से स्व. पं. द्वारकाप्रसाद तिवारी 'विप्र' जी के समय से निकट का संबंध था। भारतेन्दु साहित्य समिति तथा उसके सभी सदस्यों की ओर से मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धाजलि समर्पित करता हूँ, तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें सद्गति प्रदान करें उनके परिवार को इस महान वज्राघात को सहन करने की शक्ति दें।

■ **श्री श्याम लाल चतुर्वेदी (वरिष्ठ कवि-साहित्यकार , बिलासपुर)**

श्री हरि नारायण सिंह ठाकुर का निधन छत्तीसगढ़ की अस्मिता उसके स्वाभिमान के विस्तीर्ण का एक लक्ष्य करने वाला अवरोध है। राज्य निर्माण से उनका एक सपना पूरा हुआ था पर राज्य कैसा बने इसे प्रश्न पर वे अत्यधिक व्यथित थे। उनके सोच को स्वरूप नहीं मिल रहा था। हरि थे तो मेरे अनुज पर वे मेरे आदरणीय आत्मीय थे। ठाकुर प्यारेलाल सिंह की स्मृति को बनाए रखने में उनकी साधना का प्रच्छन्न योगदान था। स्वास्थ्य लाभ कर भोपाल से लौटने पर रायपुर में मिला तब बात कम रोना अधिक हुआ था।

हरि नारायण सिंह सयानों समवयस्कों और तरूणों को जोड़ रखने में बेजोड़ थे। हृदय की व्यथा करने में शब्द सक्षम नहीं हैं लिखने का मन भी नहीं है। मैं रो लेना चाहता हूँ।

■ **श्री देवदास बंजारे (अंतरराष्ट्रीय पंथी कलाकार, भिलाई)**

मोर मन बहुत दुख लगीस हे, वीर पुत्र छत्तीसगढ़ महतारी के सपूत बेटा स्व. हरि ठाकुर जी ह अब हमर बीच नइ रहीगे, वोह मोला अपन बेटा कस मया करे, कभू वह जात-पात के सम्बन्ध में सोचय नहीं, अऊअपन घर भीतर बैइठ बर कहय और आदरपूर्वक सम्मान करे।

छत्तीसगढ़ शासन ह बहुत बड़े गलती करीस हे कि स्व. हरि ठाकुर जी ला सम्मान नई करीन। आज ओह नइ रहीस, अब आगू समय में स्व. हरि ठाकुर जी के नाव ले पुरस्कार देय के घोषणा करे।

■ हरि ठाकुर को विस में श्रद्धांजलि

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और साहित्यकार हरि ठाकुर को आज विधान-सभा में श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सदन में दो मिनट के मौन के बाद कार्यवाही पाँच मिनट के लिए स्थगित कर दी गई। अध्यक्ष राजेंद्रप्रसाद शुक्ल ने उनके निधन को प्रदेश और हिंदी जगत के लिए अपूरणीय क्षति निरूपित किया।

विधानसभा में आज कार्यवाही प्रारंभ होते ही अध्यक्ष श्री शुक्ल ने शोक प्रस्ताव रखा और स्वर्गीय श्री ठाकुर के जीवन का स्मरण किया। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के लिए उनके द्वारा किए गए संघर्ष को याद किया और कहा कि वे विद्यार्थी जीवन से ही स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेते रहे। इसी तरह वर्ष 1956 से 1966 तक रायपुर में वकालत भी की थी। इसी तरह 1960 में छत्तीसगढ़ हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। साहित्य के क्षेत्र में श्री ठाकुर की सक्रियता की उन्होंने विस्तार से चर्चा की।

नेता प्रतिपक्ष नंदकुमार साय ने सूनापन का अहसास दिलाते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ महतारी का पुजारी अपनी अंतिम यात्रा प्रारंभ कर चुका है। नई पीढ़ी उन्हें संदर्भ के रूप में हमेशा याद करेगी। छत्तीसगढ़ को जिस तरह वे देखना चाहते थे, उसे सच करने से ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि मिलेगी। विपक्ष के उपनेता महेश तिवारी ने कहा कि श्री ठाकुर छत्तीसगढ़ के लिए लड़ने वाले महान योद्धा थे। छत्तीसगढ़ महतारी की गोद सूनी हो गई है। भाजपा सदस्य बृजमोहन अग्रवाल ने श्री ठाकुर का स्मरण करते हुए कहा कि ऐसे साहित्यकार रहे, जिन्हें सम्मान की भूख कभी नहीं रही। सदगीपूर्ण जीवन उन्होंने व्यतीत किया। उनके रास्ते पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। शिक्षा मंत्री सत्यनारायण शर्मा ने आजादी की लड़ाई के लिए किए गए कार्यों को याद करते हुए बताया कि श्री ठाकुर ने छत्तीसगढ़ी की भाषा की मान्यता दिलाने के लिए प्रारूप बनाने में मदद की थी। नियति का खेल है कि इस प्रारूप को

मुख्यमंत्री से अनुमोदन मिला है, मगर वे नहीं रहे हैं। उन्होने बताया कि पंडित सुंदर लाल शर्मा शोधपीठ के प्राचार्य बालचंद कछवाहा से श्री ठाकुर की कृतियाँ का प्रकाशन करने का आग्रह वे कर चुके हैं। पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री धनेंद्र साहू ने कहा कि श्री ठाकुर में छत्तीसगढ़ की माटी के लिए समर्पण का भाव था। कांग्रेस सदस्य धर्मजीत सिंह ने आग्रह किया कि उनकी याद का अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सरकार को कोई प्रभावशाली प्रयास करना चाहिए। शोक संवेदना का सिलसिला खत्म होने के बाद सदन में दो मिनट का मौन रखा गया।

■ डॉ. चित्तरंजन कर

वे हरि भी थे और ठाकुर भी थे – वे हरि भी थे और ठाकुर भी थे। व्यवहार में सहजता और आत्मीयता, परंतु सिद्धांतों में कोई समझौता नहीं। स्वाभिमान के मूल्य पर कुछ भी उन को ग्राह्य नहीं था। छत्तीसगढ़, छत्तीसगढ़ी, और छत्तीसगढ़िया के लिए वे समर्पित थे, सदैव-सर्वत्र-सर्वथा। साहित्य, संस्कृति, और इतिहास की त्रिवेणी थे हरिठाकुर जी, जिन की लेखनी कभी कुंठित नहीं हुई। उन के समूचे साहित्य में उन के व्यक्तित्व का ओज है, उन के संस्कार की शालीनता है, और उन की अध्ययनशीलता की भव्यता है। उन्होने अपनी कृतियों से यह सिद्ध कर दिया है कि – ***"हम न मरैं, मरिहैं संसारा"।***

■ डॉ. बलदाऊ प्रसाद शर्मा

छत्तीसगढ़ के साँस्कृतिक एवं साहित्यिक धरातल का विशाल वटवृक्ष असमय ही ढह गया।

■ ठा. लवसिंह दीक्षित, (उपाध्यक्ष, हिन्दी साहित्य परिषद, बेमेतरा)

स्व. हरि ठाकुर छत्तीसगढ़ भर के नहीं सब्बो प्रांत अऊ देश के, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी साहित्य के धारन रहिस हे।

■ श्री रमेश बैस

श्री हरिठाकुर जी के निधन से मुझे अपार दुख हुआ।

■ **फूलचंद चोपड़ा**

उनके लिखे पत्र मेरे लिए अमूल्य हो गए।

■ **लाला जगदलपुरी**

मालूम हुआ कि हरि भाई नहीं रहे, बड़ी बेचैनी हुई। स्व. हरि ठाकुर छत्तीसगढ़ **और छत्तीसगढ़ी** से पूर्णतः प्रतिबद्ध थे। उनकी यह प्रतिबद्धता निश्चय ही छत्तीसगढ़ में **बेमिसाल थी।**

■ **वासुदेव चंद्राकर**

छत्तीसगढ़ के यशस्वी सपूत और अपने अत्यंत स्नेही भाई को खोकर मैं न केवल व्यथित हूँ बल्कि शंकित भी हूँ कि इस दौर के सूनेपन में हम सबको सृजन और जागृति का संदेश कैसे मिल सकेगा।

■ **स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी**

स्वतंत्रता संग्राम, साहित्य और पत्रकारिता क्षेत्र में मेरा सहयोगी रहा है। मैं तुम्हारे परिवार को क्या सांत्वना दूं मैं स्वयं दुखी हूँ।

अन्य श्रद्धांजलियां

- **रामकुमार तिवारी, बेमेतरा**
- **अशासकीय महाविद्यालयीन प्राध्यापक संघ, कला एवं वाणिज्य कन्या महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर इकाई, रायपुर**
- **के. के. चक्रवर्ती, प्रमुख सचिव वन एवं संस्कृति**
- **चितरंजन रावल, नारायणपुर, बस्तर**
- **बल्देव प्रसाद कोशले, स्व. सं.से.**
- **छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण संयोजन समिति, बिलासपुर**
- **जिला सतर्कता समिति, रायपुर**

- अधिवक्ता संघ, बेमेतरा
- देवधर महंत, बलौदा बाजार
- साहित्य समन्वय समिति, रायपुर
- हिन्दी-साहित्य समिति, रायपुर
- हिन्दी-साहित्य समिति, पाटन
- वनवासी विकास समिति, रायपुर
- छत्तीसगढ़ प्रांत इतिहास संकलन समिति
- श्रीमती शांति यदु
- भारत चंद्र काबरा
- पं. सुंदरलाल शर्मा स्मृति शिक्षण समिति सुंदरनगर, रायपुर
- डॉ. दामोदर प्रसाद त्रिपाठी, स्व.सं.से.
- मदनलाल गुप्ता, चांपा
- मोईज कपासी, इप्टा
- अवंतिका- साँस्कृतिक संस्था
- कौतुक - साँस्कृतिक संस्था
- चित्रोत्पला लोककला परिषद
- छत्तीसगढ़ राज्य अखंड धरना स्थल
- सरयूकांत झा
- परदेशीराम वर्मा

प्रेरणा : दो कविताएँ

जैसा मैंने देखा

उन की बड़ी-बड़ी आँखें
जैसे शोषकों को
दिन-रात ललकारतीं
भौंहें तनी हुई उन के लिए
जो पी जाते हैं खून-पसीना
किसान और मजदूरों का

विचार अनेक पीढ़ियों से
निरंतर गुजरते
तथ्य, श्रृंगार, क्रोध-आवेग
और शब्दों का अस्त्र-शस्त्र लिए
तभी तो ललकारते हुए शब्द
यह भी कह चुकते हैं कि -
हरामखोरों के लिए
अनेक सुभीत्ते हैं
लेकिन कभी-कभी की
गंभीर-सी मुस्कराहट
आस्था और संभावनाएँ जगातीं
लौट कर कहती कविता

दीवारें रोक सकती हैं
सूरज की किरनें
रोक नहीं सकतीं अंधेरा

उनकी यादें आँसुओं को
व्यर्थ बहाने के लिए नहीं
क्रोध के संसार को है सींचने.

कुछ भी नहीं बदला

बीते साल
अकाल की भीड़ को
चीरकर निकल रही थी भूख
पलायन से अप्रवासी बनने
अब धान से लबालब होकर
फटती कोठियाँ और मंडियाँ
जैसे थे उतार-चढ़ाव इस
ज्वार-भाटे के
आज भी वैसा ही सब कुछ
असमानताओं की दीवारों
के आगे-पीछे केवल
बदले हैं चेहरे बाँटने वालों के
बदले हैं स्वाद
हमारे व्यंजन के
कुछ वाद्य-यंत्रों की धुनें भी
बदला नहीं है
तो गाँव-खेत और खलिहान .

-डॉ. सुधीर शर्मा

हाशिये पर नहीं केन्द्र में हैं वे



वे हैं तो घर और दुनिया में बची हैं, मुस्कानें,
संबंधों में गर्माहट और खुशियों के मौसम।
हमने माना है ये
महिलाओं की मजबूती के लिए,

इंदिरा सहारा योजना, इंदिरा सूचना शक्ति,
इंदिरा हरेली-सहेली, इंदिरा गांव गंगा और

उठ रहे हैं स्व सहायता समूहों जैसे नये कदम
हम दे रहे है उन्हें सिर्फ सुरक्षा नहीं, गरिमा और आदर

हम गढ़ रहे हैं एक मजबूत समाज - एक नया दौर

छत्तीसगढ़ सरकार : सादगी के साथ जन सेवा

छत्तीसगढ़ संवाद द्वारा जनसम्पर्क के लिए आक